



04 - बारूद बनाम
भोजन: क्या युद्ध भूख
को जन्म देगा?



05 - सेमिनार में शामिल
होना क्या वैचारिक
पूर्वाग्रह का संकेत!



06 - बैतूल-इटासी के बीच
बचे 21 किमी में नहीं
मिल रही सुविधाएं



07 - संभागायुवत ने ग्राम
घाटपलासी एवं झरखेड़ा
में किया अमरकट की...

सु

प्रसंगवश

सिने संगीत के स्वर्णयुग की अंतिम ध्वजवाहिका का स्वर्गारोहण

सुरों की मलिका आशा भोसले का अचानक इस फानी दुनिया से चले जाना भारतीय फिल्म संगीत और पार्श्वगायन के स्वर्ण युग की अंतिम जीवित ध्वजवाहिका का स्वर्गारोहण है। रविवार को उन्होंने 92 वर्ष के सांख्यिक जीवन के बाद मुंबई के ब्रीच कैन्डी अस्पताल में अंतिम सांस ली। हालांकि उनके चाहने वालों को उम्मीद थी कि आशाजी फिर उसी मस्ती के साथ फिर सुरों के रंग बिखेरेंगी, लेकिन वैसे न हो सका। फिल्म संगीत के महान स्त्री-स्वरो में आशाजी की स्पष्टता केवल अपनी बड़ी बहन और गान सरस्वती लता मंगेशकर से रही। हालांकि इन दोनों में श्रेष्ठतम कौन ये बहस पहले अंडा या मुर्गी सी अनंत है। संक्षेप में कहें तो लताजी अगर संगीत की मीरा हैं तो आशाजी राधा। गायन में अपनी रेंज, विविधता और वर्स्टेलिटी में तो वो कभी-कभी लताजी को भी पीछे छोड़ती प्रतीत होती हैं। महान संगीतकार अनिल विद्यास ने लता और आशा की अद्भुत तुलना करते हुए कहा था कि लता आत्मा से गाती हैं और आशा शरीर से। लेकिन समग्रता में ये दोनों परस्परपूरक हैं। आत्मा बिना क्या देह और देह बिना क्या आत्मा। लता अगर संगीत की देवी हैं तो आशा संगीत की अप्सरा। दोनों ही आसमान से उतरी हुई ऐसी आवाजें हैं, जो सदियों में पैदा होती हैं। लताजी सादगी, पवित्रता, विनम्रता और दैवी स्वर आभा के सर्वोच्च शिखर का प्रतीक हैं तो आशाजी मानव जीवन के संघर्ष, उतार-चढ़ाव, राग द्वेष, जिजीविषा और श्रेष्ठतम को हासिल करने की अंतहीन जिद का सर्वदा फहराता ध्वजदंड हैं।



अजय बोकिल
लेखक सुनहरे सवरे के
कार्यकारी प्रधान संग्राहक हैं।

फिल्म और सुगम संगीत के सुनहरे दौर की अंतिम जीवित रचयिता और साक्षी खो दिया है। जीवन और संगीत को आशाजी ने हमेशा एक चुनौती के रूप में लिया और हर मोड़ पर उसे पराजित कर दिखाया। निजी जिंदगी में नियति के कई आघात सहने के बाद भी आशा भोसले विजय पताका हमेशा अपने हाथों में थामे दिखीं। लताजी के विपरीत बनावत और प्रयोगधर्मिता उनके स्वभाव का हिस्सा रहा। जीवन में आए तमाम उतार-चढ़ावों का असर उन्होंने अपनी संगीत साधना पर कभी नहीं होने दिया। 91 साल की उम्र में भी आशाजी उसी मस्तानी अदा से मंच पर गाती थीं कि लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। हिंदी सिने और गैर फिल्म गीतों के अनमोल रत्नों में से कई आशाजी के नाम हैं। वह अपने आप में गायन का स्कूल हैं। सुरों और शब्दों की अदायगी, ठहराव, झटके और परफेक्ट स्वराभिनय के माध्यम से किरदार को साकार करना आशाजी की खूबी है। सिने संगीत का सर्वश्रेष्ठ और कालजयी युगल गीत 'अभी न जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं', आशाजी ने मोहम्मद रफी के साथ जिस अंदाज में गाया है, वहां मानो वक्त भी ठहर गया- सा लगता है। भाव और रस कोई सा भी हो, सुरों की शक्त में आशाजी हर किरदार में अपने बेहतरीन किरदार में नमूदा होती हैं। आवाज पर उनका असाधारण कंट्रोल, सुरों के साथ कभी टेस्ट क्रिकेट तो कभी टी-20 की तरह सहज और पावरफुल बैटिंग करना आशाजी जैसी गायिकाओं के लिए ही संभव था। यूं तो उनके लाजवाब गीतों की लिस्ट बहुत लंबी है। लेकिन स्वरो के माध्यम से चुल्लबाजी,

मादकता, अल्ट्रड्रग्स, दीवानगी, प्रेम, वियोग, मिलन, रूठना, हंसाना, कव्वाली, अर्द्ध शास्त्रीय गायन, गजल गायन, भक्तिभाव, लोकगीत, हर रंग में आशा भोसले हर बार अलग नजर आती हैं। अपने पांच दशक लंबे गायन करियर में उन्होंने 20 भाषाओं में 12 हजार से ज्यादा गाने गाए। लेकिन कभी घंमट नहीं किया। ये वो दौर था, जहां साधना ही पुरस्कार थी। प्रयोगधर्मिता और नई चुनौतियों की स्वीकारना आशाजी की फितरत थी। फिल्म 'उमराव जान' में आशाजी ने गीत 'ये क्या जाह है दोस्तों, ये कौन सा दयार है' में एक जवान और अलग तरह की पुरुषरस आवाज निकाल कर सभी को चौंका दिया था। आशाजी ने करीब साठ सालों तक देश के सभी महान संगीतकारों के लिए गाया। फिर चाहे 'अब के बरस भेज भैया को बाबुल, सावन में लीजो बुलाय रे' जैसी ब्याहता बेटी की मार्मिक गुहार हो या फिर 'दम मारो दम' जैसी नशीली आवाज हो। छोड़ दो आंचल जमाना क्या कहेगा जैसी शर्मिली छेड़छाड़ हो अथवा 'मैं जब भी अकेली होती हूं तुम चुपके से आ जाते हो', सपनीली युवती की भावना हो। 'तारा मन दर्पण कहलाए' जैसी भक्ति में डूबी प्रार्थना हो या फिर 'बलमा माने ना' जैसी शिकायत हो अथवा 'नन्हें मुझे बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है' जैसा बालगीत हो, 'पान खाए सैया हमारो' जैसे नीटकी गीत हो अथवा 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है, जैसी मनुहार हो। आशाजी हर रंग और रस के साथ सम्बन्धित किरदार से एकाकार होती दिखती हैं। महान संगीतकार ओ.पी. नैयर के साथ आशाजी के गाए लाजवाब गीतों ने तो सिने संगीत के माधुर्य और मस्ती का ऐसा अध्याय रचा है कि जो कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। इसी तरह क्रांतिकारी संगीतकार और दूसरे पति

आर.डी.बर्मन के साथ भी आशाजी ने कई बेमिसाल गीत गाए। केवल राष्ट्रभक्ति गीतों के मामले में दीदी लता मंगेशकर उनसे फिनिश लाइन से आगे जाती दिखती हैं। खास बात यह है कि दोनों बहनों ने जो युगल गीत गाए हैं वो भी ड्रुएट सिंगिंग के बेहतरीन नमूने हैं। यही नहीं मराठी में आशाजी के छोटे भाई और महान संगीतकार हृदयनाथ मंगेशकर ने कई कालजयी गीत गवाए हैं। भारत रत्न छोड़कर आशाजी को अपनी सृजनात्मकता के लिए सभी बड़े पुरस्कार मिले। मंगेशकर परिवार पर यूं तो सरस्वती का ही हाथ है, भारतीय फिल्म संगीत की वह यकीनन 'फर्स्ट फैमिली' है। ऐसा परिवार जिसमें तकरीबन सभी को संगीत का अमृत कलश जन्मजात मिला हो। ऐसे परिवार में संगीत साधना के साथ संगीत की अघोषित आंतरिक प्रतिस्पर्धा भी उतनी ही कठिन और कठोर होती है। ऐसे में जब कभी-कभार लताजी अपनी इस छोटी बहन के किसी गाने को सुनकर सरहना मिलती कि आशा तूने गीत मुझसे भी अच्छा गाया है तो मानिए कि श्रेष्ठता के पैमाने अपनी सतह से खुद ऊपर उठ जाते हैं। आज जो पीढ़ी साठ के दशक में है या पचास से ऊपर है, वह इस मामले में सौभाग्यशाली है कि उसने सिने संगीत के इन महान नक्षत्रों की अनंत सुखदायी चांदनी के बीच जन्म लिया, उस संगीत को भांगा और आजतक उसकी रसवर्षा से उबर नहीं पाए हैं। संभव है कि एआई की पीढ़ी संगीत के आत्मिक दौर को कभी समझ और महसूस न कर पाए। लेकिन आशाजी जैसी महान गायिकाओं ने अपने सुरों के मयूरपंख से रची जो कालजयी स्वयंजलियां विरासत में छोड़ी हैं, वो उनके भौतिक रूप से देवलोकगमन के बाद भी सदैव करोड़ों मनों को आह्लादित करती रहेंगी।

subhasaverenews@gmail.com
facebook.com/subhasaverenews
www.subhasavere.news
twitter.com/subhasaverenews

शहर की सुबह

बना मधुर मेरा जीवन!
नव नव सुमनों से चुन चुन कर
धूलि, सुरभि, मधुरस, हिम-कण,
मेरे उर की मृदु-कलिका में
भरदे, करदे विकसित मन।

बना मधुर मेरा भाषण!
बंशी-से ही कर दे मेरे
सरल प्राण औ' सरस वचन,
जैसा जैसा मुझको छेड़ें
बोलूँ अधिक मधुर, मोहन;
जो अकर्ण-अहि को भी सहसा
करदे मन्त्र-मुग्ध, नत-फन,
रोम रोम के छिद्रों से मा!
फूटे तेरा राग गहन,
बना मधुर मेरा तन, मन!

- सुमित्रानन्दन पंत



संगीत जगत के लिए बड़ा झटका 'सुरों की मलिका' आशा ताई नहीं रहीं 92 साल की उम्र में ली अंतिम सांस

मुंबई (एजेंसी)। संगीत जगत को एक बड़ा झटका लगा है। सैकड़ों फिल्मों के गीतों को स्वरो से सजाने वाली और शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी खास मुकाम हासिल करने वाली 92 साल की गायिका आशा भोसले ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया है। कार्डियक अरेस्ट और फेफड़ों में इन्फेक्शन की वजह से शनिवार को ही उन्हें ब्रीच कैन्डी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। रविवार सुबह से ही उनकी हालत नाजुक बनी हुई थी। आशा भोसले के निधन के बाद बॉलीवुड इंडस्ट्री में मातम पसर गया है।

आज होगा अंतिम संस्कार

जासूसी के मुताबिक सोमवार को उनका अंतिम संस्कार होगा। उनका पार्थिव शरीर सुबह 11 बजे लोअर परले में उनके घर पर ही अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा।

आशा भोसले के निधन पर पीएम मोदी ने जताया दुःख

● पीएम ने कहा-मुलाकातों की यादें हमेशा संजोकर रखूंगा
नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय संगीत जगत की दिग्गज गायिका और पद्म विभूषण से सम्मानित आशा भोसले के निधन पर दुःख जताया। पीएम मोदी ने आशा भोसले के साथ अपनी पुरानी मुलाकात की कई फोटो सोशल मीडिया पर शेयर की और कहा उनके साथ हुई मुलाकातों की यादें हमेशा संजोकर रखेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि आशा की असाधारण संगीत यात्रा ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया और दुनिया भर में अनगिनत दिलों को छुआ। चाहे उनकी दिल को छू लेने वाली धुनें हों या उनकी जोशीली रचनाएं। पीएम मोदी ने एक्स पोस्ट में लिखा, भारत की सबसे आइकॉनिक और बहुमुखी आवाजों में से एक आशा भोसले जी के निधन से मैं बहुत दुखी हूँ।

आघा में 184 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन बेटियों और बहनों के विकास से ही होगा समग्र विकास संभव : मुख्यमंत्री

● आघा में सीएम मोहन यादव, रोड शो किया ● सांदिपनी स्कूल में छात्राओं से किया संवाद

आघा (नर)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार दोपहर सीहोर जिले के आघा पहुंचे हैं। उन्होंने यहां रोड शो किया। कन्नौद रोड मंडी गेट से शुरू हुए रोड शो का जगह-जगह फूल मालाओं से स्वागत किया गया। रोड शो सांदिपनी विद्यालय पहुंचा। यहां सीएम ने क्लास में जाकर छात्र-छात्राओं से संवाद भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आघा में नवनिर्मित सांदिपनी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का लोकार्पण कर बालिकाओं से संवाद किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आघा में रोड शो कर जनता का अभिवादन किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बेटियों और बहनों के विकास के बिना समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पहली बार नारी सशक्तिकरण का बड़ा कार्य इसी माह होने जा रहा है। अब लोकसभा और विधानसभा में बहनों को 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया जाएगा। इसके लिए



संसद की विशेष तीन दिवसीय बैठक 16 अप्रैल से होने जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हमारी सरकार अब तक लाइली बहन योजना के माध्यम से बहनों को 55 हजार करोड़ से अधिक राशि दे चुकी है। आज आघा से प्रदेश की 1.25 करोड़ लाइली बहनों के खातों में 1836 करोड़ रुपये अंतरित किये गये हैं। उन्होंने कहा कि हमारे देश में मातृ सत्ता की व्यवस्था है। अब प्रदेश में हर माह रक्षाबंधन मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को सीहोर

जिले के आघा में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लाइली बहना योजना की 35 वीं किशत की राशि 1836 करोड़ रुपये हितग्राही बहनों के खातों में सिंगल क्लिक से अंतरित किये।
छात्राओं के लिए तीन शिक्षण संस्थाओं में नई सीमागत
मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आघा की छात्राओं के लिए आज विशेष सीमागत का दिन है। मुख्यमंत्री ने कन्या महाविद्यालय और कन्या

विद्यालय में छात्रावास के साथ कन्या विद्यालय के भवन निर्माण की घोषणा करते हुए कहा कि राज्य सरकार बेटियों को अच्छे से अच्छे शिक्षण सुविधाएं प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सीहोर जिले के आघा में आज त्रिवेणी संगम है। आघा मां पार्वती नदी की उद्गम स्थली है। यहां के सांदिपनी विद्यालयों में 90 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट स्कूल छोड़कर आए हैं। राज्य सरकार विद्यार्थियों को 4 लाख साइकिलें वितरित कर रही है। मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप और स्कूल टॉपर बच्चों को स्कूटी दी जा रही है।

किसान कल्याण को प्राथमिकता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार ने वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष मनाने का निर्णय लिया। किसानों के कल्याण को प्राथमिकता दी जा रही है। किसानों के लिए अकेले दो साल में लगभग 10 लाख हेक्टेयर सिंचाई का रकबा बढ़ गया है। गेहूं 40 रुपए बोनस देकर 2625 रुपए प्रति क्विंटल खरीद की जा रही है। अब गांवों में 24 घंटे बिजली सप्लाई कर किसानों को दिन में भी सिंचाई के लिए बिजली दे रहे हैं। सिर्फ 5 रुपए में बिजली कन्वर्शन दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 12 लाख से अधिक लखपति दीर्घियां हैं। अकेले सीहोर में 1 लाख से अधिक स्व-सहायता समूहों की दीर्घियां हैं। प्रदेश के 5 लाख से अधिक स्व-सहायता समूहों की 65 लाख से अधिक बहनों सशक्त हुई हैं। राज्य सरकार मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत विवाह के लिए 55 हजार रुपए की राशि दे रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 184 करोड़ की लागत के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन भी किया। इनमें आघा एवं जावर में नवनिर्मित सांदिपनी विद्यालय का लोकार्पण भी शामिल है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं में पात्र लोगों को हितलाभ भी वितरित किये।

होर्मुज की सफाई शुरू... युद्धपोत, ड्रोन और हेलीकॉप्टर तैनात

अमेरिका ने शुरू किया 'हाईटेक ऑपरेशन', सुरक्षा भी बढ़ाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में सुरक्षा बढ़ाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। अमेरिकी सेना ने इस अहम समुद्री रास्ते में बिछी संभावित बाजूरी सुरांगों को हटाने की तैयारी शुरू कर दी है। इसके लिए उन्नत युद्धपोत, ड्रोन और हेलीकॉप्टर तैनात किए गए हैं। अमेरिकी केंद्रीय कमान (सेंटकॉम) के तहत दो गाइडेड मिसाइल विध्वंसक युद्धपोत इस ऑपरेशन में शामिल हैं। इनका मुख्य काम समुद्र में छिपी बाजूरी सुरांगों का पता लगाना और उन्हें नष्ट करना है, ताकि जहाजों की आवाजाही सुरक्षित हो सके। अमेरिकी सेना के मुताबिक, यह अभियान खास तौर पर उन सुरांगों को हटाने के लिए है



जिन्हें ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड फोर्स (आईआरजीसी) से जोड़ा जा रहा है। ये सुरांगें बड़े जहाजों और तेल टैंकरों के लिए गंभीर खतरा बन सकती हैं।
ड्रोन से होगी समुद्र की जांच- अमेरिका इस काम के लिए सीधे जहाजों को खतरों में नहीं डाल रहा है। इसके बजाय पानी के अंदर चलने वाले रोबोटिक ड्रोन यानी यूयूवी (अनमैन्ड अंडरवाटर व्हीकल) का इस्तेमाल किया जा रहा है। ये ड्रोन टारपीडो के आकार के होते हैं और अपने आप समुद्र में घूमकर हाईटेक सोनार तकनीक से समुद्र की सतह का नक्शा बनाते हैं।



बांग्लादेश में दलित हिंदू पर हमला, ममता बनर्जी पर वार

बंगाल चुनाव के मैदान से सीएम योगी की यूपी पर नजर

लखनऊ (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव के मैदान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धमाकेदार एंट्री मारी है। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के मुद्दे को जोरदार तरीके से उठाया। सीएम योगी ने इस मामले में पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार की चुप्पी पर भी सवाल खड़े किए। मुस्लिम तुष्टिकरण की बात कर उन्होंने पूरे विपक्ष को घेर लिया है। सीएम योगी ने शनिवार को लखीमपुर खीरी में बांग्लादेश से विस्थापित हुए हिंदू परिवारों को जमीन का मालिकाना हक देने संबंधित कागजात वितरण के बाद बंगाल के रण में इस मुद्दे को छोड़ा।

सीएम योगी ने यूपी की स्थिति का किया जिक्र
सीएम योगी ने पश्चिम बंगाल के चुनावी मैदान में यूपी की स्थिति का भी जिक्र किया। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तुष्टीकरण नहीं, बल्कि संतुष्टीकरण है। अब प्रदेश में दंगे नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि यूपी में जितने माफिया थे, सब जहनुम की यात्रा पर चले गए।

संक्षिप्त समाचार

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर फसे हैं 20,000 भारतीय नाविक

● ईरान युद्ध के बीच भारत ने लॉन्च किया स्पेशल ऑपरेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान और अमेरिका के बीच पाकिस्तान में बातचीत फेल होते ही भारत अलर्ट मोड में आ गया है। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में फसे 18 जहाजों को निकालने के लिए भारत ने ऑपरेशन शुरू कर दिया



एलपीजी जहाज ने पार किया होर्मुज

बंदरगाहों को इन जहाजों को बर्थांग में प्राथमिकता देने का निर्देश दिया गया है। रिपोर्ट के अनुसार एलपीजी जहाज ग्रीन आशा ने होर्मुज जलडमरूमध्य को पार कर लिया है और मुंबई स्थित पोर्ट की ओर बढ़ रहा है। भारत के अभियान से बंदरगाहों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है, जहां करीब 106,890 केजी के कंटेनर और बड़ी मात्रा में खराब होने वाला माल फंसा हुआ है।

असम के बाद अब बंगाल का रुख करेंगे हेमंत सोरेन

● टीएमसी के लिए मांगेंगे वोट, आदिवासी इलाकों पर फोकस

रांची (एजेंसी)। असम में अपने दल झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के उम्मीदवारों के पक्ष में धुआंधार चुनाव प्रचार करने के बाद अब मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जल्द ही बंगाल का रुख करने जा रहे हैं। वहां वे सत्तारूढ़ तुणमूल कांग्रेस के समर्थन में चुनावी अभियान को धार देंगे। उनके कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है, जबकि झामुमो के वरिष्ठ नेता पहले ही बंगाल पहुंचकर समन्वय की रूपरेखा तैयार करेंगे। ममता बनर्जी के समर्थन में झामुमो पूरी ताकत झोकने की तैयारी में है।



2021 के विधानसभा चुनाव में भी हेमंत सोरेन ने तुणमूल के पक्ष में प्रचार किया था, जिसका असर खासकर आदिवासी बहुल क्षेत्रों में देखने को मिला था। इस बार भी मुख्य फोकस बंगाल के आदिवासी बहुल इलाके होंगे। झारखंड से सटे जंगलमहल क्षेत्र के अलावा उत्तर बंगाल के जिलों में भी उनकी सभाएं प्रस्तावित हैं। इन इलाकों में झामुमो की विचारधारा और सामाजिक आधार को विस्तार देने की रणनीति पर काम किया जा रहा है।

प्रदेश के नौनिहालों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है

संभव। म.प्र.राज्य में 1 अप्रैल से नवीन शैक्षणिक सत्र प्रारम्भ हो चुका है लेकिन मूलभूत सुविधाओं के अभाव में प्रदेश के नौनिहालों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है। वर्तमान में प्रदेश में 40 प्रतिशत पिक्षकों के पद रिक्त हैं। 5 हजार से अधिक स्कूल भवन असुरक्षित होकर जर्जर हैं। 3400 स्कूलों में तो शौचालय ही नहीं हैं, 1895 स्कूल शिक्षक विहीन हैं, 10 हजार स्कूलों में बिजली की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है तो कैसे गढ़ा जाएगा नौनिहालों का सुरक्षित भविष्य ?

सामाजिक कार्यकर्ता एवं अधिकाता बी.एल.जैन ने प्रदेश की बदहाल शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार लाने के लिये प्रदेश के मुख्यमंत्री, स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रतापसिंह, जनजातीय कार्यमंत्री कुं. विजय शाह, प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य विभाग एवं सचिव स्कूल शिक्षा विभाग व आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग को पत्र प्रेषित कर अवगत कराया है कि देश की आजादी के 79 वर्षों के बाद भी प्रदेश की शैक्षणिक व्यवस्था बिगड़ी हुई है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के तहत 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने का लक्ष्य तय किया गया था लेकिन प्रदेश सरकार इन लक्ष्यों तक नहीं पहुंच पाई है। श्री जैन ने बताया कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की वर्ष 2026

की रिपोर्ट जो म.प्र. विधानसभा में प्रस्तुत की गई उसमें प्रदेश की शिक्षा की गुणवत्ता बिगड़ने के साथ बुनियादी ढांचा भी ध्वस्त नजर आया। प्रदेश में 2 लाख 89 हजार शिक्षकों के पद स्वीकृत हैं इसमें 1 लाख 15 हजार 678 पद रिक्त हैं। प्रदेश के 83 हजार 514 स्कूलों में से 5 हजार स्कूलों के भवन बच्चों के लिये सुरक्षित नहीं होकर जर्जर हैं यही नहीं 3 हजार 400 स्कूलों में शौचालय भी नहीं हैं। 10 हजार स्कूल तो ऐसे हैं जहां बिजली की सुविधाएं भी नहीं हैं। 1895 स्कूल तो ऐसी हैं जहां 1 भी शिक्षक नहीं है। 40 हजार स्कूलों में सुरक्षा के लिये बाउंड्रीवाल भी नहीं हैं। हजारों स्कूलों में शुद्ध पेयजल भी उपलब्ध नहीं है। अनेक स्कूल तो तबेले या झोपड़ियों में संचालित हो रही हैं।

डिजिटल इंडिया की बात करने वाले प्रदेश के 59 हजार स्कूलों में कम्प्यूटर की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है अनगिनत समस्याओं के बीच चौकाने वाला आंकड़ा यह है कि पिछले 10 वर्षों में पहली से 12वीं तक में 22 लाख 3 हजार विद्यार्थियों की कमी शासकीय स्कूलों में दर्ज की गई है जबकि इन 10 वर्षों में जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई है। श्री जैन ने कहा है कि ये आंकड़े दर्शाते हैं कि प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में जबरदस्त गिरावट आई है। देश की सर्वोच्च अदालत ने जनवरी 26 में निर्देशित किया है कि

देश के प्रत्येक स्कूल चाहे वह निजी हो शासकीय बच्चियों के लिये मुफ्त सेनेटरी पेड एवं छात्र-छात्राओं के लिये पृथक-पृथक टायलेट होना जरूरी है। इन निर्देशों का पालन नहीं करने पर संबंधित स्कूल के खिलाफ कार्यवाही की जावेगी। श्री जैन ने बड़वानी जिले की शैक्षणिक व्यवस्थाओं में कमी का उल्लेख करते हुये जिले की 2 हजार 547 स्कूलों में प्रथम श्रेणी प्राचार्य के शतप्रतिशत पद एवं उ.मा.वि. के 90 प्रतिशत प्राचार्यों के पद के अलावा शिक्षकों की भारी कमी व बुनियादी सुविधाओं की ओर भी शासन का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया है। एक ओर तो प्रदेश सरकार बजट की 16 प्रतिशत राशि यानी 50 हजार लाख करोड़ की राशि मुफ्त की योजनाओं में खर्च कर व्यक्ति को श्रम से दूर कर रही है वहीं शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी मूलभूत एवं बुनियादी सुविधाओं पर खर्च करने के लिये खजाना खाली नजर आता है। कमीशनखोरी के कारण मरम्मत एवं नवीन निर्माण कार्य में भ्रष्टाचार की जड़ गहरी होने के कारण करोड़ों रुपये की शासकीय निधि का दुरुपयोग हो रहा है दिखावे के लिये कुछ लोगों के खिलाफ निलंबन की कार्यवाही कर दी जाती है लेकिन ठेक कार्यवाही के अभाव में भ्रष्टाचार की यह बेल निरंतर फल फूल रही है। श्री जैन ने प्रदेश के नौनिहालों के सुनहरे भविष्य के लिये एवं संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों की प्राप्ति के लिये उक्त समस्याओं का त्वरित निराकरण करने की मांग की है।

प्रेमी ने नहीं की बात तो टावर पर चढ़ी प्रेमिका

चार दिन से रुठा था लवर, टावर पर चढ़ देने लगी जोर-जोर से आवाज

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले के बैरवार गांव में रविवार को प्रेम प्रसंग से जुड़ा एक मामला सामने आया। यहां एक युवती अपने प्रेमी से चार दिन से बात न होने से नाराज होकर मोबाइल टावर पर चढ़ गई।



सुबह करीब 5 बजे युवती के टावर पर चढ़ने और चिल्लाने की आवाज सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे। उन्होंने तुरंत पुलिस और प्रशासन को सूचना दी। सूचना मिलते ही जतारा पुलिस और तहसीलदार मौके पर पहुंच गए। युवती करीब चार घंटे तक टावर पर चढ़ी रही और लगातार अपने प्रेमी का नाम लेकर बुला रही थी। इस दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीण जमा हो गए। प्रशासन के आश्वासन और प्रेमी के मौके पर पहुंचने के बाद पुलिस की समझाइश पर युवती टावर से नीचे उतरी।

दुश्मनों के लिए काल बनेगी ध्रुवास्त्र मिसाइल

एपीजे अब्दुल कलाम ने की थी कल्पना, अब सेना में होगी शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन द्वारा विकसित ध्रुवास्त्र मिसाइल भारतीय सेना के बेड़े में शामिल होने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह हेलीकॉप्टर से दागी जाने वाली नाग एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल का आधुनिक संस्करण है, जिसे पहले हेलिना के नाम से जाना जाता था। यह मिसाइल न केवल भारत की आत्मनिर्भर भारत मुहिम को मजबूती प्रदान करेगी, बल्कि युद्ध के मैदान में खासकर ऊंचे पहाड़ी इलाकों में भारतीय वायुसेना और थल सेना की मारक क्षमता को कई गुना बढ़ा देगी।

थर्ड-जनरेशन फायर एंड फॉरगेट प्रणाली शामिल

ध्रुवास्त्र भारत के इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम का हिस्सा है। इसकी परिकल्पना 1980 के दशक में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नेतृत्व में की गई थी। नाग मिसाइल परिवार के तहत अब तक जमीन से दागी जाने वाली नाग, कैरियर और मैन-पोर्टेबल जैसे कई संस्करण तैयार किए जा चुके हैं। ध्रुवास्त्र इसी कड़ी का हवाई संस्करण है। ध्रुवास्त्र को सबसे बड़ी ताकत इसकी थर्ड-जनरेशन फायर एंड फॉरगेट प्रणाली है। एक बार लक्ष्य पर लॉक होने के बाद, मिसाइल ऑटोमैटिक रूप से उसे ट्रैक कर नष्ट कर देती है।



स्वदेशी हेलीकॉप्टरों की ताकत

ध्रुवास्त्र को विशेष रूप से लक्ष्य जैसे ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए तैयार किया गया है। इसे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित रुद्र और प्रचंड जैसे अटैक हेलीकॉप्टरों से दागा जा सकता है। हाल ही में सरकार ने 156 प्रचंड हेलीकॉप्टरों के ऑर्डर दिए हैं। इन हेलीकॉप्टरों पर ध्रुवास्त्र की तैनाती से भारतीय सेना को सीमा पर दुश्मन के टैंकों और बखरबंद गाड़ियों के खिलाफ एक निर्णायक बढ़त मिलेगी। सरकार ने सितंबर 2023 में लगभग 700 करोड़ रुपये की लागत से 200 से अधिक ध्रुवास्त्र मिसाइलों की खरीद को मंजूरी दी थी। एक मिसाइल की लागत 1 करोड़ रुपये से भी कम रहने का अनुमान है। इसकी तैनाती के बाद भारत को रूस या यूरोप से कॉफुस और मितान जैसी पुरानी मिसाइलें आयात करने की जरूरत कम हो जाएगी। ध्रुवास्त्र की सफलता के बाद डीआरडीओ मिशन में काम कर रहा है।

इस्लामाबाद में 21 घंटे तक चली बातचीत बेनतीजा रही

ईरान-अमेरिका के बीच नहीं बन पाई बात



अमेरिकी उपराष्ट्रपति बोले- हमने उन्हें फाइनल ऑफर दिया

ईरान बोला-ट्रम्प की शर्तें ज्यादा सख्त, उन्हें मानना असंभव

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में ईरान और अमेरिका के बीच शांति को लेकर चल रही बातचीत बेनतीजा रही। यह 21 घंटे से ज्यादा समय तक चली। रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों के बीच होर्मुज स्ट्रेट खोलने और न्यूक्लियर प्रोग्राम पर पेंच फंसा है। वेंस अपनी टीम के साथ अमेरिका के लिए रवाना हो गए हैं। लौटने से पहले उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा कि अमेरिका बिना डील के लौट रहा है। यह अमेरिका से ज्यादा ईरान के लिए बुरी खबर है। उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी समझौते के लिए जरूरी है कि ईरान ये वादा करे कि वह परमाणु हथियार नहीं बनाएगा। अमेरिका की शर्तें स्पष्ट थीं, लेकिन ईरान ने उन्हें नहीं माना। वेंस ने यह भी कहा कि आगे समझौते की संभावना पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। उन्होंने कहा, हम उन्हें फाइनल ऑफर देकर जा रहे हैं। अब देखना है कि ईरान इसे मानता है या नहीं। वहीं, ईरान ने कहा कि अमेरिका की शर्तें जरूरत से ज्यादा सख्त थीं। इस वजह से समझौते का रास्ता नहीं निकल पाया।

टीएमसी ने मदरसों के लिए 6000 करोड़ दिए

● पीएम बोले-अब 15 साल का हिसाब देना होगा ● कहा-सिलीगुड़ी की जनसभा उनकी नौद उड़ा देगी

कोलकाता (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि चुनाव के बाद बंगाल से टीएमसी का जाना तय है। कल मेरे रोड शो में लोगों ने जो प्यार दिखाया, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। आज सिलीगुड़ी की यह जनसभा टीएमसी की नौद उड़ा देगी। पीएम का रविवार को पश्चिम बंगाल दौरे का दूसरा दिन था। वे सिलीगुड़ी में जनसभा कर रहे थे। मोदी ने दार्जिलिंग की सभा 5 और



जलपाईगुड़ी जिले की सभा 7 सीटों पर भाजपा के उम्मीदवारों के लिए वोट मांगे। इस दौरान उन्होंने कहा- टीएमसी ने मदरसों के लिए 6000 करोड़ दिए, लेकिन यहां के विकास के लिए कुछ नहीं किया। वह सिर्फ अपने खास वोट

बैंक के लिए पैसे देती है। आपने टीएमसी के निर्भर शासन काल में इतने सालों में पश्चिम बंगाल की बर्बादी देखी है। उन्हें 15 साल का हिसाब देना होगा। सभा के दौरान पीएम ने सीएए (नागरिकता (संशोधन) अधिनियम) का भी जिक्र किया। उन्होंने 'कमल खिलाओ, चुसपैठिया भगाओ' के नारे लगाते हुए कहा कि टीएमसी की सरकार निर्भर है, लेकिन हमने मदद की है।

देश में एक 'टुकड़े-टुकड़े गिरोह' सक्रिय है

देश में एक टुकड़े-टुकड़े गिरोह सक्रिय है, जिसने सिलीगुड़ी कॉरिडोर को बंद करने की धमकी दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिलीगुड़ी की जनसभा में कहा कि टीएमसी ने काम नहीं केवल काले कारनामों किए हैं। उन्होंने ने नाथ बंगाल की संरचना को पीछे रखा हुआ है। सिलीगुड़ी में जनसभा के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल की जनता टीएमसी सरकार से पाई-पाई का हिसाब मांग रही है।

महिला आरक्षण विधेयक पर सरकार की पूरी तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने अपने सभी सांसदों को तीन लाइन का व्हिप जारी कर उनसे गुरुवार से शुरू होने वाले संसद के विस्तारित बजट सत्र के दौरान अपने-अपने सदन में उपस्थित रहने को कहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने 16 से 18 अप्रैल तक तीन दिन का विशेष सत्र बुलाया है। इस दौरान महिला आरक्षण अधिनियम में प्रस्तावित संशोधनों पर विचार करने एवं इन्हें पारित करने के लिए पेश किए जाने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गत बुधवार (आठ अप्रैल) को उन प्रमुख विधेयकों को मंजूरी दे दी जिनका उद्देश्य 2029 के संसदीय चुनाव से पहले महिलाओं के लिए आरक्षण लागू करना और लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाकर 816 करना है। इनमें से 273 सीट महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। भाजपा ने अपने सभी सांसदों को भेजे संदेश में कहा, 16 से 18 अप्रैल 2026 तक यानी आगामी गुरुवार से शनिवार तक लोकसभा और राज्यसभा में भाजपा के सभी सदस्यों को तीन-लाइन का व्हिप जारी

बीजेपी ने सांसदों को जारी किया 3 लाइन की व्हिप



पारिसीमन कानून में संशोधन के लिए अलग बिल लाएगी सरकार

राज्यों की विधानसभाओं में भी इसी अनुपात में सीटों का आरक्षण होगा। सरकार एक संशोधन बिल के एक संविधान साथ-साथ परिसीमन कानून में संशोधन के लिए अलग साधारण बिल भी लाएगी। ताकि नए सिरे से सीटों का निर्धारण हो सके। नई सीटों का निर्धारण 2027 की जनगणना के बजाय 2011 की जनगणना के आधार पर किया जा सकता है।

किया जा रहा है। इसने कहा, सभी माननीय केंद्रीय मंत्रियों और सदस्यों से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त तीनों तिथियों पर सदन में उपस्थित रहें। संदेश में कहा गया, सदन में उपस्थिति अनिवार्य

है। कोई अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा। सदस्यों से अनुरोध है कि वे व्हिप का सख्ती से पालन करें और सदन में अपनी निर्बाध उपस्थिति सुनिश्चित करें।

प्रधानमंत्री ने सभी दलों को चिट्ठी लिखी

पीएम मोदी ने लिखा कि 2029 के लोकसभा और विधानसभा चुनाव महिलाओं के लिए आरक्षण के साथ कराए जाने चाहिए। महिलाओं को राजनीति में ज्यादा प्रतिनिधित्व देने की इच्छा सभी पार्टियों ने लंबे समय से जताई है, अब इसे हकीकत में बदलने का समय है। वहीं, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पत्र के जवाब में पत्र लिखकर कहा कि राज्य चुनावों के बीच संसद का विशेष सत्र बुलाना यह दिखाता है कि सरकार इस कानून को राजनीतिक लाभ के लिए जल्दबाजी में लागू करना चाहती है। खड़गे ने यह भी मांग की कि इस मुद्दे पर सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए और परिसीमन से जुड़े मुद्दों पर भी विस्तार से चर्चा की जाए। इस प्रस्ताव के तहत लोकसभा की सीटें मौजूदा 543 से बढ़ाकर 816 की जाएगी, जिनमें 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी।

हेडगेवार ने एकता और आजादी के लिए आरएसएस बनाया था

● भागवत बोले-हिंदू समाज में एकता की कमी, ये बार-बार गुलामी की बड़ी वजह

निजामाबाद (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि केशव बलिराम हेडगेवार ने देश को विदेशी शासन से आजाद करने और हिंदुओं के बीच फूट को खत्म करने के मकसद से आरएसएस की स्थापना की थी। उन्होंने कहा कि हेडगेवार का मानना था कि समाज में एकता की कमी ही बार-बार गुलामी की बड़ी वजह रही। संघ प्रमुख ने कहा कि हेडगेवार ने ब्रिटिश शासन को खत्म करने के लिए राजनीतिक और हथियारबंद विरोध समेत कई रास्तों पर काम किया था। भागवत ने कहा कि आजादी के लिए काम करते हुए हेडगेवार को यह एहसास हुआ कि अंग्रेज भारतीयों को गुलाम बनाने वाले पहले बाहरी शासक नहीं थे। उनके मुताबिक, समस्या सिर्फ बाहर से आने वाली ताकत



नहीं थी, बल्कि समाज के भीतर भी एक कमी थी। भागवत शनिवार को तेरांगना के निजामाबाद जिले के कंडाकुर्थी गांव में श्री केशव स्मृति मंदिर के उद्घाटन के बाद बोल रहे थे। यह गांव हेडगेवार का पैतृक गांव है। उन्होंने कहा- हममें कोई कमी थी, जिसकी वजह से हमें बार-बार हार का सामना करना पड़ा। इसलिए उस कमी को दूर करना जरूरी था। हिंदुत्व का मतलब दूसरों के साथ मिलकर रहना है।

परिष्कार

खेती-किसानी को सर्वोच्च प्राथमिकता देती मोहन सरकार



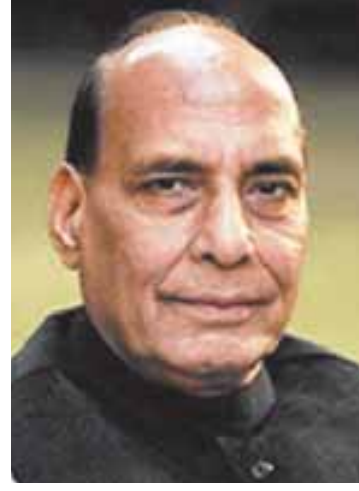
अरुण पटेल

लेखक सुबह
सखेरे के प्रबंध
संपादक हैं

मध्यप्रदेश की डॉ. मोहन यादव सरकार खेती-किसानी और किसानों को केन्द्र बिन्दु बनाकर अपनी योजनाओं को लागू करने के प्रति पूरी तरह से संकल्पबद्ध नजर आ रही है और उसका प्रयास है चूँकि मध्यप्रदेश भी कृषि प्रधान प्रदेश है इसलिए यहां पर किसानों को साथ जोड़कर और उनका दिल जीतकर विकास की नई गंगा बहाई जा सकती है। जहां तक किसानों का सवाल है किसान प्रदेश की अर्थव्यवस्था में एक प्रकार से रीढ़ की हड्डी माने जा सकते हैं। खेती-किसानी यदि संपन्न होगी तो किसानों की न केवल दशा सुधरेगी बल्कि उन्हें अपने आपको संवारे के साथ ग्रामीण विकास को भी नये पंख लगेंगे जिससे आगे चलकर मध्यप्रदेश पूरी तेजी के साथ विकास के पथ पर आगे बढ़ता जायेगा। मोहन यादव सरकार की यह सोच कि किसानों की जिन्दगी में यदि बदलाव आयेगा तो उससे गांवों तक विकास की नई राह और तेज होने में समय नहीं लगेगा। किसान समाज का वह वर्ग है जो हर घर को प्रभावित करता है, खेती-किसानी यदि मजबूत होगी तो प्रदेश को विकास का एक आधारभूत ढांचा मिल जायेगा।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की यह सोच भी अपने आपमें काफी मायने रखती है कि देश की सीमा पर जवान और खेती में किसान दोनों का समान महत्व है और दोनों ही अपनी मिट्टी के लिए प्राणपण से सेवा में लगे रहते हैं। यह बात सही है कि हमारे किसान देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और यही अपनी हमारी असली ताकत है क्योंकि इसके बिना हमारे भोजन की थाली अधूरी रहेगी। वास्तव में खेती-किसानी आसान काम नहीं है बल्कि यह बड़े जोखिम का काम है क्योंकि हमारे किसान पूरी मेहनत व लगन से देशवासियों के पेट का पोषण करते हैं। जब किसान को पूरे तरीके से सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भरता प्राप्त होगी

और वह सम्पन्न होगा तब ही यह कहा जा सकेगा कि किसान प्रदेश के विकास में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है। किसानों की मेहनत से ही हमारे देश और प्रदेश का खाद्यान्न निर्यात दुनिया पहुंच गया है, चूँकि उसकी उपज से ही सबका पेट भरता है इसलिए उसके विकास के प्रति राज्य सरकार भी पूरी



तरह प्रतिबद्ध है और केन्द्र की सरकार भी। सीमा पर जवान और खेत में किसान दोनों का ही समान महत्व है क्योंकि एक देश की सीमा की रक्षा करता है और घुसपैठ रोकता है तो दूसरा खेतों में कड़ी मेहनत कर अनाज का उत्पादन करता है।

किसानों और सेना का कल्याण ही भाजपा सरकार का एकमेव लक्ष्य है और इसके लिए संकल्पबद्ध होकर प्रयास भी

किए जा रहे हैं। किसान सम्मान निधि के रूप में हर पात्र किसान के बैंक खाते में भी सीधे 6000 रुपये भेजे जा रहे हैं जिससे कि वे खाद, बीज और किसानों के अन्य जरूरी सामान खरीद सकें, यह किसानों की मेहनत का सम्मान है। भाजपा सरकार हजारों करोड़ रुपयों की सहायता किसान भाईयों को दे चुकी है।



किसानों के प्रति भाजपा सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए राजनाथ यह भी कहते हैं कि गांव, गरीब, नारी, युवा और खेती-किसानी की लगातार बेहदारी के लिए हमारी भाजपा सरकार के प्रयास हमेशा जारी रहेंगे। रायसेन के दशहरा मैदान में जो बात राजनाथ ने कही है वह भी सही प्रतीत होती क्योंकि किसानों को सीधे नकद पैसा मिल रहा है।

किसानों का विकास और भाजपा की सोच

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान मानते हैं कि इस समय किसानों के विकास का महायज्ञ चल रहा है। राजनाथ सिंह पहले भी केंद्रीय कृषि मंत्री रह चुके हैं और वे स्वयं एक किसान पुत्र हैं इसलिए किसानों के दुख दर्द को वे भली-भांति समझते हैं। इस प्रकार रायसेन की पवित्र धरा पर ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और कृषि का जो संगम हो रहा है वह एक प्रकार से महायज्ञ है और किसान के लिए एक पाठशाला की तरह है। वास्तव में इसे किसानों की एक पाठशाला ही कहा जायेगा क्योंकि जब किसानों को कृषि की नवीन तकनीक देखने-समझने का अवसर मिलेगा तो उनका भविष्य भी संवरेगा। रायसेन जिला कृषि सहित हर क्षेत्र में आगे चल रहा है क्योंकि यहां का धान और गेहूँ दुनिया भर में प्रसिद्ध है तो वहीं इससे मध्यप्रदेश के किसानों और खेतिहर मजदूरों की शान बढ़ती है। चूँकि यह महायज्ञ रायसेन में हो रहा है और रायसेन की अपनी प्रदेश के साथ ही वैश्विक पटल पर ख्याति है, रायसेन में ही दो विश्व धरोहरों सांची स्तूप और भीमबेटका हैं। उनका कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ही एक शक्तिशाली विकसित भारत बनना है और देश को मजबूत इरादों वाले प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री मिले हैं।

और यह भी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मध्यप्रदेश के लिए राजनाथ सिंह को शुभकर मानते हैं, क्योंकि वे मध्यप्रदेश में खेती-किसानी को नई दिशा देने आये हैं। इस प्रकार राज्य में खेती-किसानी को एक मजबूत आधार मिल रहा है।

भोपाल में 12 अभ्यर्थियों को एनडीए एजाम सेंटर से लौटाया

● परीक्षा शुरू होने से 30 मिनट पहले ही एंट्री बंद, सर्वर डाउन होने से फेस ऑर्थेंटिकेशन रुका

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए), नौसेना अकादमी (एनए) और संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) के एजाम रविवार को हो रहे हैं। प्रशासन ने परीक्षा को निष्पक्ष और सुरक्षित बनाने के लिए फेस ऑर्थेंटिकेशन, मेटल डिटेक्टर जांच और सख्त प्रवेश नियम लागू किए हैं। इधर, भोपाल में एनडीए की परीक्षा के लिए शासकीय नवीन हायर सेकेंडरी स्कूल अंशु कालोनी में परीक्षा केंद्र का गेट सुबह 9:30 बजे बंद कर दिया गया है। ऐसे में अभ्यर्थियों को सेंटर से लौटा दिया गया। इस बार परीक्षा की पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सभी केंद्रों पर फेस ऑर्थेंटिकेशन की व्यवस्था की गई है। हालांकि, शासकीय नवीन हायर सेकेंडरी स्कूल के इंचार्ज ने बताया सर्वर डाउन होने की वजह से फेस ऑर्थेंटिकेशन नहीं हो सका।

परिजन बोले- किसी ने समस्या नहीं सुनी - सीहोर से अपनी बहन को परीक्षा दिलाने भोपाल आए विवेक शर्मा ने बताया कि वे लगभग 50 किलोमीटर दूर अहमदपुर से आए थे। परीक्षा केंद्र पर एंट्री का समय सुबह 9.30 बजे था, लेकिन वे 9:27 बजे पहुंचे। इसके बावजूद गेट बंद कर दिया गया और उन्हें अंदर प्रवेश नहीं दिया गया। उन्होंने बताया कि केंद्र के अधिकारियों से कई बार अनुरोध किया गया कि कुछ मिनट की देरी होने के बावजूद अंदर जाने दिया जाए, क्योंकि बाहर 8-10 अन्य छात्र भी खड़े थे। लेकिन अधिकारियों ने साफ मना कर दिया और किसी की बात नहीं सुनी। विवेक शर्मा ने कहा कि, एडमिट कार्ड पर भी यह स्पष्ट रूप से नहीं लिखा था कि एक-दो मिनट की देरी पर प्रवेश नहीं मिलेगा। कुछ लोगों को अंदर भेजा गया, लेकिन वे भी बिना किसी समाधान के वापस बाहर आ गए। किसी अधिकारी ने उनकी समस्या को ठीक से नहीं सुना।

पूर्व एसडीएम की बेटी का टूटा घर तो महिला बैंक मैनेजर से लेने लगा बदला

● पति से कराया तलाक, अब पीछा करने का आरोप

भोपाल (नप्र)। महिला बैंक मैनेजर ने एक पूर्व एसडीएम पर बदनाम करने के आरोप लगाए हैं। इसके बाद भोपाल के एमपी नगर पुलिस स्टेशन में मैनेजर ने शिकायत दर्ज करवाई है। आरोपी की पहचान संजय उपाध्याय के रूप में हुई है। महिला ने उनके बेटे सचल उपाध्याय पर पीछा करने, धमकाने और उसकी निजी जानकारी का गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया है।

शाहपुरा थाने में दर्ज हुई थी जौरी एफआईआर - महिला की शिकायत पर एमपी नगर थाने में केस दर्ज कर लिया है। इससे पहले शाहपुरा पुलिस स्टेशन में जौरी एफआईआर दर्ज हुई थी। पीड़ित महिला जाटखेड़ी स्थित रूचि लाइफस्कैप में रहती है। वह सेंट्रल बैंक में मैनेजर है। उन्होंने सबसे पहले 12 मार्च 2026 को शिकायत दर्ज कराई थी। इसमें उन्होंने एक पुराने विवाद के चलते लंबे समय हो रही प्रताड़ना का आरोप लगाया था।

आरोपी कई सालों से कर रहा है परेशान - वहीं, पीड़ित महिला ने कहा कि आरोपी पिछले कई सालों से महिला से निजी दुरस्मर्ति निकाल रहा है। महिला का आरोप है कि बार-बार हमारी गाड़ियों का पीछा करते हैं। साथ ही हमारी निजी और पेशेवर जानकारी इकट्ठा करते थे। साथ ही उस जानकारी का इस्तेमाल कर सामाजिक प्रतिष्ठ को नुकसान पहुंचाया है।

शहर छोड़ने की धमकी दी - साथ ही महिला को शहर छोड़ने की धमकी दी गई। कहा गया कि चली जाओ, नहीं तो परिणाम भुगतने पड़ेंगे। साथ ही हमारे परिवार के सदस्यों और सहकर्मियों से संपर्क किया और इसके बारे में झूठी बातें फैलाई। इससे गहरा मानसिक और भावनात्मक कष्ट हुआ। कोविड के दौरान हुआ था विवाद - दरअसल, महिला ने बताया कि इस विवाद की शुरुआत कोविड महामारी के दौरान हुई थी। परिवारिक झगड़े में एक-दूसरे पर आरोप लगाए थे। तब से लेकर अब तक दोनों के बीच तनाव बढ़ता ही गया। महिला का दावा है कि उसे लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है।

तलाक हो गया - इसके साथ ही महिला ने आरोप लगाया कि संजय उपाध्याय द्वारा फैलाई गई अफवाहों के कारण, उसकी शादी टूट गई और उसका तलाक हो गया। साथ ही संजय उपाध्याय पर अपने खिलाफ झूठे मामलों दर्ज कराने का भी आरोप लगाया।

विस अध्यक्ष तोमर द्वारा वरिष्ठ पत्रकार कल्याण संघ की स्मारिका का विमोचन

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने रविवार को वरिष्ठ पत्रकार कल्याण संघ की स्मारिका का विमोचन किया। उन्होंने संसदीय और पत्रकारिता के क्षेत्र में अध्ययन को कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए अपेक्षा की कि दोनों क्षेत्रों में अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ना चाहिए इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष हरिमोहन मोदी और महासचिव वीरेंद्र सिंह ने तोमर को एक ज्ञान प्रस्तुत कर अपेक्षा की कि वे समाजों के समाधान के लिए शासन को निर्देशित किया। इस संक्षिप्त कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष ने पत्रकारों के साथ विधानसभा की कार्यप्रणाली पर विमर्श किया और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। उन्होंने पत्रकारों को आश्वस्त किया कि शासन पत्रकारों की सुरक्षा के संबंध में कानून बनाने के लिए गंभीरता से विचार कर रहा है। विधानसभा के पुरस्कारों पर भी विचार चल रहा है। इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार कैलाश गौड़, चंद्रहंस शुक्ल एन.पी. अगवाल, रामेश्याम अगवाल, भूपेन्द्र निगम, गिरीश उपाध्याय, शिव हंस सुहालका, दिनेश चंद्र जोशी, संजय प्रकाश शर्मा, वीरेंद्र सिंह, प्रेम नारायण प्रेमी, विनायक श्रीवास्तव, प्रवीण शुक्ला, पुरुषोत्तम मोदीनी, बालमुकुन्द भारती, आत्मीय, सनत कुमार जैन, विश्वंभर शुक्ल एवं विजय दास आदि उपस्थित रहे।

मई में 7 ट्रिप नहीं चलेगी भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस

रेलवे में टेंनेंस होना है, दोनों ओर से गाड़ियां प्रभावित

जोधपुर से भी 7 ट्रिप कैसिल

इसी तरह गाड़ी संख्या 14813 जोधपुर-भोपाल एक्सप्रेस जोधपुर से 02, 03, 04, 07, 11, 12 और 13 मई 2026 को 7 ट्रिप निरस्त रहेगी। इससे दोनों दिशाओं में यात्रियों की आवाजाही प्रभावित होगी। बेहतर सुरक्षा और संचालन के लिए लिया गया फैसला। रेल प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यह कार्य भविष्य में ट्रेनों की सुरक्षा, गति और संचालन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से किया जा रहा है। रेलवे ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे यात्रा शुरू करने से पहले अपनी ट्रेन की स्थिति की जानकारी जरूर प्राप्त करें, ताकि किसी भी असुविधा से बचा जा सके।

एमपी नगर में ट्रांसफॉर्मर में लगी आग से ब्लास्ट

● खड़ी फॉर्च्यूनर कार बनी आग का गोला, बिल्डिंग में भरा धुआं, इलाके में मची रही अफरा-तफरी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एमपी नगर जोन-2 में रविवार को ट्रांसफॉर्मर में आग लगी। ब्लास्ट की चपेट में फॉर्च्यूनर कार आ गई। देखते ही देखते कार आग का गोला बन गई। स्थानीय लोगों ने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन लपटें तेज होती गईं। स्थानीय लोगों ने सुबह करीब 10.35 बजे फायर कंट्रोल रूम को सूचना दी। फायर ब्रिगेड के पहुंचने तक आग ने बिल्डिंग को भी चपेट में ले लिया। बिल्डिंग में धुआं भर गया। पुल बोंगदा और माता मंदिर से आइ 2 दमकलों ने आग पर काबू पा लिया। ट्रांसफॉर्मर में स्पाकिंग से धमाका - कार ट्रांसफॉर्मर के बेहद करीब खड़ी थी। पास में मैकेनिक की दुकान थी। पहले स्पाकिंग हुई, फिर धमाका हुआ। ट्रांसफॉर्मर में तेल होने से आग तेजी से फैल गई और कार चपेट में आ गई। कार बिल्डिंग से सटी खड़ी थी, जिससे आग की लपटें बिल्डिंग तक पहुंच गईं। ग्राउंड फ्लोर का मुख्य गेट जल गया और ऊपर तक धुआं भर गया। दमकल ने समय रहते आग पर काबू पा लिया। जली हुई कार सेकेंड हैंड थी, कीमत करीब 18 लाख रुपए बताई जा रही है।



औबेदुल्ला गंज जनपद अध्यक्ष की कार जली - बताया जा रहा है कि फॉर्च्यूनर कार पर औबेदुल्ला गंज जनपद अध्यक्ष के नाम की तख्ती लगी थी, जिसे हटा दिया गया है। ट्रांसफॉर्मर की मरम्मत शुरू कर दी गई है। बिजली कंपनी की टीम मौके पर मौजूद है।

मौके पर तैनात किया गया था पुलिस बल - एमपी नगर टीआई जयहिंद शर्मा ने बताया कि आग पर समय रहते काबू पा लिया गया, कोई जनहानि नहीं हुई। भीड़ को रोकने के लिए पुलिस बल तैनात था। ट्रांसफॉर्मर में स्पाकिंग से आग लगने की आशंका है। फॉर्च्यूनर कार रिपेयरिंग के लिए आई थी। जांच जारी है।

आख बंद होते ही दिमाग में चलने लगता है रीप्ले

दस में से 4 लोग परेशान, हर रात बढ़ता मानसिक दबाव, नींद और सेहत पर असर

पहले ऐसे दो - तीन केस ही सामने आते थे, अब 40 प्रतिशत केस: डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

भोपाल (नप्र)। रात में बिस्तर पर जाते ही अगर दिनभर की बातें बार-बार दिमाग में घूमने लगती हैं, तो यह सिर्फ सोचने की आदत नहीं, बल्कि एक गहरी मानसिक प्रक्रिया है। मनोचिकित्सकों के अनुसार इन दिनों ओपीडी में आने वाले 10 में से 4 मरीज इस समस्या से जूझ रहे हैं। खासतौर पर लाइट बंद होते ही दिमाग 'रीप्ले मोड' में चला जाता है। किस व्यक्ति से कौन सी बात गलत कह दी, किसने क्या सोचा होगा, ऐसे सवाल बार-बार उभरते हैं। यह समस्या सिर्फ नींद ही नहीं बिगाड़ती, बल्कि धीरे धीरे मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास पर भी असर डालने लगती है।

क्या है 'रीप्ले' का खेल जो नहीं रुकती सोच - मनोचिकित्सक डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी बताते हैं कि यह सामान्य ओवरथिंकिंग नहीं, बल्कि दिमाग की एक बायोलॉजिकल प्रक्रिया है। दिनभर के अनुभवों को समझने और उनका मतलब निकालने के लिए दिमाग रात में सक्रिय हो जाता है। जब आसपास शांति होती है और बाहरी गतिविधियां कम हो जाती हैं, तब दिमाग अंदर की और फोकस करने लगता है। यही वजह है कि दिन में छोटी लगने वाली

बातें रात में बड़ी लगने लगती हैं। डॉ. त्रिवेदी के अनुसार, पहले ऐसे दो से तीन केस ही सामने आते थे। लेकिन, अब यह समस्या लगातार बढ़ रही है। बीते एक साल की बात करें तो ओपीडी में 30 से



40 प्रतिशत मामले इसी समस्या के साथ आ रहे हैं। कई लोगों में यह रात में नींद ना आने की समस्या और फिर पूरा दिन सुस्ती की समस्या का रूप में परेशान करती है। डॉ. त्रिवेदी के अनुसार, दिनभर हमारा दिमाग काम, मोबाइल, बातचीत और शोर में उलझा रहता है। लेकिन जैसे ही रात होती है, यह बाहरी इनपुट कम हो जाता है। इस समय दिमाग का

एक हिस्सा, जिसे डिफॉल्ट मोड नेटवर्क कहा जाता है, ज्यादा सक्रिय हो जाता है। यह हिस्सा आत्मचिंतन और यादों से जुड़ा होता है। ऐसे में दिमाग हाल की बातचीत और भावनात्मक घटनाओं को बार-बार दोहराने लगता है।

सोशल टेंशन को खतरे की तरह लेता है दिमाग - किसी बातचीत में छोटी सी गलती या अजीब सा पल हमें मामूली लग सकता है, लेकिन दिमाग इसे खतरे की तरह ले सकता है। मानव विकास के दौरान सामाजिक स्वीकृति जरूरी थी। इसलिए आज भी दिमाग सामाजिक असहजता को तनाव के रूप में लेता है। इस दौरान शरीर में कोर्टिसोल (स्ट्रेस हार्मोन) बढ़ जाता है, जिससे दिमाग शांत होने के बजाय और ज्यादा सक्रिय हो जाता है। रात के समय दिमाग दिनभर की यादों को व्यवस्थित करता है। खासतौर पर भावनात्मक घटनाओं को ज्यादा प्राथमिकता मिलती है। लेकिन जब दिमाग गहरी नींद में जाने के बजाय एक्टिव सोच में फंसा रहता है, तो यह प्रक्रिया थका देने वाली बन जाती है। इससे नींद पूरी नहीं होती और अगला दिन भी प्रभावित होता है।

जब सोच बन जाती है लूप - कभी-कभार किसी बात को याद करना सामान्य है, लेकिन जब यही प्रक्रिया बार-बार होने लगे तो यह लूप बन जाती है। यह लूप तीन चीजों से चलता है। इसमें अनिश्चितता, खुद पर शक और अधूरी बात का एहसास शामिल हैं। दिमाग तब तक घूमता रहता है, जब तक उसे कोई जवाब नहीं मिल जाता, भले ही असल में कोई जवाब हो ही न। मनोचिकित्सक डॉ. त्रिवेदी के अनुसार, लगातार ऐसा होने से चिंता बढ़ सकती है, आत्मविश्वास कम हो सकता है और व्यक्ति खुद को लेकर ज्यादा नेगेटिव सोचने लगता है। धीरे-धीरे दिमाग हर बातचीत को तनाव से जोड़ने लगता है, जिससे सामान्य स्थितियां भी भारी लगने लगती हैं।

दिमाग सिर्फ याद नहीं करता, एडिट भी करता है - यह 'रीप्ले' सिर्फ याद करने तक सीमित नहीं रहता। दिमाग इसमें क्या होता अगर - जैसे सोन भी जोड़ता है। इसे मानसिक समय यात्रा कहा जाता है। इस प्रक्रिया में दिमाग पुराने अनुभवों के आधार पर भविष्य की तैयारी करता है। लेकिन इसका साइड इफेक्ट यह होता है कि इंसान बार-बार उसी सोच में फंस जाता है।

संपादकीय

मप्र: बैंकों का डूबता पैसा

हर महीने कर्ज पर कर्ज लेती जा रही मध्यप्रदेश सरकार के लिए चेतावनी की घंटी है कि राज्य में सरकारी योजनाओं का ज्यादातर पैसा डूबत खाली में जा रहा है। ये पैसा ज्यादा सरकारी गारंटी का है, जो विभिन्न बैंकों ने हिताहितियों को दिया और जिसकी प्रतिपूर्ति नहीं हुई। यानी सरकारी गारंटी में बैंकों के अब तक 2100 करोड़ रु. डूब चुके हैं, जो कि एक बड़ी रकम है। मीडिया में छपी सरकार और बैंकों की 25 मार्च को जारी ताजा रिपोर्ट के अनुसार राज्य में मुख्यमंत्री के नाम पर चल रही स्वरोजगार और आवास योजनाओं की सैहट बिगड़ती जा रही है। जिन योजनाओं को युवाओं और गरीबों का सहारा बना था, वे बैंकों का सिरदंड बन गई हैं। सीएम ग्रामीण आवास मिशन में तो बकाया राशि का 67.9% हिस्सा एनपीए (डूबत कर्ज) हो चुका है, जो कि 1,670 करोड़ रुपए है। कुछ ऐसा ही हाल मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना और सीएम स्वरोजगार योजना का भी है। यहां लक्ष्यों की प्राप्ति तो 12.7% दिख रही है, लेकिन वसूली के मामले में बैंक हांफने लगे हैं। इन योजनाओं में 422 करोड़ (42.9%) एनपीए की श्रेणी में जा चुके हैं। मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास मिशन में पांच साल में एनपीए 21% तक बढ़ गया है। कुल मिलाकर ग्रामीण आवास व स्वरोजगार योजनाओं में ही करीब 2100 करोड़ एनपीए में हैं। चार साल में एनपीए बढ़ने का ये ट्रेंड मार्च 2022- 46.3% मार्च 2023 - 49.9% मार्च 2024 - 53.3% मार्च 2025 - 63.1% दिसंबर 2025 - 67.9% (यह खतरनाक स्थिति का संकेत है) ग्रामीण आवास मिशन के अंतर्गत विगत 5 साल में 46% से 68% तक बढ़ गया है। बैंकों के मुताबिक सरकार से हुए एक एमओयू की वजह से इन खातों को बंद करने वन टाइम सेटलमेंट भी नहीं कर पा रहे हैं। इसी तरह विमुक्त, घुमंतू और अर्धघुमंतू स्वरोजगार में सिर्फ 11.8% उपलब्धि दर के लिए बनी योजनाओं में उपलब्धि मात्र 11.8% रही है। यानी बैंकिंग सुविधाओं का लाभ अब भी अंतिम छोर तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसमें एक से 10 लाख तक लोग मिलता है। टंटया मामा आर्थिक कल्याण योजना में तो आधे आवेदन पोंडा इस स्कीम में पांच हजार के लक्ष्य के मुकाबले 2 हजार 743 आवेदन मंजूर हुए हैं। यह 54.8% है। इसमें अजका को 10 हजार से एक लाख तक कर्ज 7% ब्याज ग्रामीण आवास में एनपीए क्षेत्र में 61% खाते हैं। इसमें भी महिलाएं 55% के साथ पुरुषों से आगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक राज्य में जो भी बैंक खाते हैं वे खातों की संख्या आधी हो गई है। दस साल पहले 86 लाख थे, अब 43 लाख हैं। सर्वाधिक 17.8 लाख खाते सागर में हैं, जहां रु. 680.9 करोड़ जमा। सिंगरौली (1.73 लाख), डिंडोरी (1.56 लाख) और बुखानपुर (1.53 लाख) जैसे जिलों में भी खातों की संख्या में प्रगति दर्ज की गई है। रिपोर्ट का सकारात्मक संकेत यह है कि प्रदेश में पुरुषों और कर्पणियों के मुकाबले ग्रामीण महिलाएं कर्ज चुकाने में सबसे इनामदार हैं। इन्हें 3,570 करोड़ रु. के वितरण के बाद भी महिला स्व सहायता समूहों का एनपीए मात्र 2.4% है। सरकारी योजनाओं का सारा बोझ केवल सरकारी बैंकों पर है। जहां सरकारी बैंक लक्ष्यों से 300% ऊपर काम कर रहे हैं। जबकि निजी बैंक इसके प्रति बेपरवाह हैं।

बारूद बनाम भोजन: क्या युद्ध भूख को जन्म देगा?

नजरिया
नृपेंद्र अभिषेक नृप
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

तिथि इतिहास में युद्ध केवल सीमाओं को नहीं बदलते, वे मनुष्यता के सबसे बुनियादी प्रश्न भोजन को भी झकझोर देते हैं। जब भी मध्य-पूर्व की धरती पर बारूद की गंध फैलती है, तब दुनिया के कोनों में बैठे करोड़ों लोग अनायास ही यह सोचने लगते हैं कि कहीं यह संघर्ष उनकी थाली तक तो नहीं पहुंच जाएगा। हलिया खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव और संभावित युद्ध की आशंकाओं ने भी वैश्विक खाद्य संकट की चर्चा को हवा दी है। किंतु प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में यह भय निकट भविष्य की वास्तविकता है, या फिर यह आशंका अधिकतर मनोवैज्ञानिक है? दरअसल, खाड़ी क्षेत्र का वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक अनोखा स्थान है। यहाँ की धरती तेल और प्राकृतिक गैस से समृद्ध है, और यही ऊर्जा स्रोत दुनिया के औद्योगिक ढांचे को गति देते हैं। एक पुरानी कहावत है कि 'मध्य-पूर्व हाइड्रोकार्बन बेचकर काबोहाइड्रेट खरीदता है।' इसका आशय यह है कि ये देश ऊर्जा निर्यात करके खाद्य पदार्थ आयात करते हैं। परंतु इस समीकरण का एक दूसरा पहलू भी है, उर्वरकों का उत्पादन। नाइट्रोजन आधारित उर्वरक, जिनके बिना आधुनिक कृषि की कल्पना अधुरी है, बड़े पैमाने पर प्राकृतिक गैस से बनते हैं, और खाड़ी क्षेत्र इसका एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

यहाँ से चिंता की पहली लहर उठती है। यदि इस क्षेत्र में युद्ध होता है, विशेषकर ईरान और उसके आसपास के समुद्री मार्गों जैसे होर्मुज़ जलडमरूमध्य में व्यवधान आता है, तो ऊर्जा आपूर्ति बाधित हो सकती है। ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि सीधे उर्वरकों के उत्पादन को प्रभावित करती है, क्योंकि गैस उनके निर्माण का मुख्य कच्चा माल है। यदि उर्वरक महंगे या दुर्लभ हो जाते हैं, तो किसानों के लिए उत्पादन लागत बढ़ेगी, जिससे भविष्य की फसलों पर असर पड़ सकता है। लेकिन यह पूरा परिदृश्य जितना भयावह प्रतीत होता है, उतना तर्कालोक नहीं है। वर्तमान में वैश्विक खाद्य बाजार अपेक्षाकृत स्थिर है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि दुनिया के पास अभी पर्याप्त खाद्य भंडार मौजूद हैं। गेहूँ, चावल और मक्का जैसी

प्रमुख फसलों के स्टॉक पिछले वर्षों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। यह भंडारण किसी संकट के समय एक ढाल का कार्य करता है, जिससे अचानक आपूर्ति में कमी होने पर भी बाजार पूरी तरह चरमराता नहीं।

यदि हम हाल के इतिहास की ओर देखें, तो रूस-यूक्रेन युद्ध इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। उस समय दुनिया को वास्तव में खाद्य संकट की आशंका का सामना करना पड़ा था, क्योंकि रूस और यूक्रेन मिलकर वैश्विक गेहूँ और अन्य अनाजों का



बड़ा हिस्सा निर्यात करते थे। युद्ध ने न केवल उत्पादन को प्रभावित किया, बल्कि बंदरगाहों और आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी बाधित कर दिया। परिणामस्वरूप, कीमतों में भारी उछाल आया और कई देशों को खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा।

परंतु वर्तमान खाड़ी संकट उस स्थिति से भिन्न है। यहाँ युद्ध यदि होता भी है, तो उसका प्रभाव अधिकतर ऊर्जा बाजार तक सीमित रहने की संभावना है, न कि सीधे कृषि उत्पादन केंद्रों पर। खेतों में खड़े फसलों बमबारी की चपेट में नहीं हैं, और न ही अनाज के विशाल भंडार युद्धभूमि में तब्दील हो रहे हैं। इसीलिए खाद्य संकट की आशंका फिलहाल दूर की कीड़ी प्रतीत होती है।

फिर भी, उर्वरकों का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाइट्रोजन, फॉस्फेट और पोटाश, ये तीनों कृषि के आधार स्तंभ हैं। इनमें से नाइट्रोजन का उत्पादन सबसे अधिक ऊर्जा-निर्भर है। यदि गैस की कीमतें बढ़ती हैं, तो उर्वरकों की कीमतें भी आसमान छूने लगती हैं।

पहले भी ऐसा हो चुका है जब उर्वरकों के दाम अचानक कई गुना बढ़ गए थे, जिससे किसानों को अपनी लागत कम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन कृषि एक धीमी प्रक्रिया है; इसका प्रभाव तुरंत नहीं दिखता। यदि आज उर्वरकों की कमी होती है, तो उसका असर अगली फसल में दिखेगा, वह भी धीरे-धीरे। इसके अलावा, किसान पूरी तरह उर्वरकों का उपयोग बंद नहीं कर देते, बल्कि उनकी मात्रा कम कर देते हैं। इससे उत्पादन में गिरावट आती है, परंतु यह

इस पर परिदृश्य में एक गहरी मानवीय सच्चाई भी छिपी है। भोजन केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। जब भी युद्ध होता है, सबसे पहले और सबसे अधिक असर गरीब और कमजोर वर्गों पर पड़ता है। विकसित देशों के पास भंडार और संसाधन होते हैं, परंतु विकासशील देशों में हर छोटी कीमत वृद्धि भी लाखों लोगों की थाली से रोटी छिन सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम केवल वर्तमान की स्थिति को देखकर संतुष्ट न हो जाएं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं के प्रति भी सजग रहें। सरकारों को चाहिए कि वे अपने खाद्य भंडार को मजबूत रखें, उर्वरकों की आपूर्ति सुनिश्चित करें, और किसानों को हर संभव सहायता प्रदान करें। अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि खाद्य सुरक्षा एक वैश्विक मुद्दा है, न कि किसी एक देश का।

खाड़ी युद्ध और वैश्विक खाद्य संकट के बीच संबंध एक जटिल और बहुआयामी विषय है। यह संबंध सीधा और तात्कालिक नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष और दीर्घकालिक है। वर्तमान परिस्थितियों में यह कहना उचित होगा कि दुनिया अभी किसी बड़े खाद्य संकट के कगार पर नहीं खड़ी है। परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि यदि हम सतर्क नहीं रहें, तो यह स्थिति बदलने में देर नहीं लगेगी। युद्ध की आहट भले ही दूर कहीं गुंज रही हो, लेकिन उसकी प्रतिध्वनि हमारी थालियों तक पहुँच सकती है। इसलिए आवश्यक है कि हम अभी और वास्तविकता के बीच संतुलन बनाए रखें, और भविष्य की चुनौतियों के लिए आजाद ही तैयार हो जाएं। यही विवेक, यही दूरदर्शिता, हमें संभावित संकट से बचा सकती है और यह सुनिश्चित कर सकती है कि दुनिया के किसी भी कोने में कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए।

राजनीति

प्रमोद भार्गव

लेखक पत्रकार हैं।



असम, केरल और पुडुचेरी में बंपर मतदान के मायने

हैं। यहां अभी भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा संभाले हुए हैं। मुख्य मुकाबला कांग्रेस से है। सरमा ने जिस तरह से घुसपैठियों के विरुद्ध आक्रामक तेवर अपनाए हुए हैं, उनसे एक बार फिर सरमा की वापसी तय लग रही है। क्योंकि बांग्लादेशी मुस्लिम और रोहिंग्या घुसपैठियों ने सीमावर्ती जिलों में न केवल स्थानीय मूल

स्थिति इस राज्य में इसलिए खराब होती रही है, क्योंकि वह असम के सीमावर्ती जिलों और बराक घाटी समेत पूरे असम में अनेक प्रवासियों को शरण देने की पैरवी करती रही है। इसलिए कांग्रेस ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का विरोध किया और एसआईआर का भी विरोध किया। क्योंकि अपने मतदाता बनाए रखने के लिए कांग्रेस ने घुसपैठियों को शरण, आधर कार्ड और

है। इस मंदिर में गहनों की चोरी का मुद्दा भी विजयन के खिलाफ गया है। चूंकि सबरीमाला मंदिर का विवाद महिलाओं से जुड़ा है, इसलिए केरल में महिलाओं ने मतदान में जबरदस्त उत्साह दिखाया है। यहां महिला मतदाताओं की संख्या 1.39 करोड़ है, जो पुरुष मतदाताओं की तुलना में करीब 7 लाख अधिक है।

बावजूद मत प्रतिशत का सबसे अहम, सुखद व सकारात्मक पहलू है कि यह अनिवार्य मतदान की जरूरत की पूर्ति कर रहा है। हालांकि फिलहाल हमारे देश में अनिवार्य मतदान की संवैधानिक भावना नहीं है। मेरी सोच के मुताबिक ज्यादा मतदान की जो बड़ी खूबी है, वह है कि अब अल्पसंख्यक व जातीय समूहों को वोट बैंक की लाचारी से छुटकारा मिल रहा है। इससे कालांतर में राजनीतिक दलों को भी तुष्टिकरण की मजबूरी से मुक्ति मिलेगी। क्योंकि जब मतदान प्रतिशत 75 से 85 होने लगता है, तो किसी धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र विशेष से जुड़े मतदाताओं की अहमियत कम हो जाती है। नतीजतन उनका संख्याबल जीत या हार की गारंटी नहीं रह जाता। लिहाजा सांप्रदायिक व जातीय आधार पर भ्रूवीकरण की राजनीति नाण्य हो जाती है। कालांतर में यह स्थिति मतदाता को धन व शराब के लालच से भी मुक्त कर देगी। क्योंकि कोई प्रयाशी छोटे मतदाता समूहों को तो लालच का चुगुना डालकर बरगला सकता है, लेकिन संख्यात्मक दृष्टि से बड़े समूहों को लुभाना मुश्किल होगा? बावजूद इन चुनौतियों में जातीय और अल्पसंख्यक राजनीति सभी दलों की कार्यशैली में खुले रूप में दिखाई दी है। साफ है, जातीय कुचक्र का धरातल नीचे से नहीं, बल्कि ऊपर से करने के उपाय किए जा रहे हैं।

बातें और बतंगड़

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।



संवादों के असर से इतने वाकिफ होते हैं कि कई असली पीएचडी वाले उनका मुंह ताकें। ऐसे विशेषज्ञों को भरोसा होता है कि उनकी उछली गई बात के अर्थों को लेकर कई गुट बनेंगे और उनमें वाक् युद्ध शुरू हो जाएगा। ऐसे विद्वानों की सेवा ने सुमेरा की जुवान को निरारा है, धार प्रदान की है। बोली के पैनपन को भोथरा होने से बचाने के लिए सुमेरा अक्सर बड़ी तुरंगरद के साथ अपनी जुवान को कुछ तीखे जुमलों के हवाले कर दिया करते हैं। बस, पैनपान और तेज हो जाता है।

सुमेरा कहा करते हैं कि भाषा, भावनाओं को प्रकट करने का एक तरीका है, जो बोला या लिखा जाता है। बिना बोले केवल हाव-भाव से भी संदेश संप्रेषित किए जा सकते हैं लेकिन सुमेरा का भरोसा बोलने में ज्यादा है। लिखनेवाले तो बहुत मिल जाते हैं, सुमेरा के पास भी हैं। पैसे और पॉवर से क्या नहीं हो सकता? और, 'भय विनु होइ न प्रीत' का फॉर्मूला भी तो है। बोलना खुद पड़ता है। किसी और से कब तक बातें कराई जा सकती हैं? वे बात-बढ़ को बेअसर करने के लिए 'बातें हैं बातों का क्या' फॉर्मूला उखल देते हैं, जिसके फॉलोअर्स की कमी नहीं। कर्मयुजन पैदा करने के लिए 'जितने मुंह उतनी बातें' तो है ही।

सुमेरा 'बात के धनी' बूढ़ने निकले तो 'बात का बतंगड़' बनानेवाले, 'बात बिगाड़नेवाले' या 'बात हँकने वाली' ज्यादा मिलें, 'दो दूक बात' करनेवाले या 'बात रखनेवाले' कम मिलें। बकौल कफ़ील आज्ञ अमरोहवी, बात निकलेगी तो फिर दूर तक जाएगी। आजकल तो बात को सात समंदर पार जानें में टाइम नहीं लगता। भाषा की बात करते हुए बात से बात निकलती जा रही है क्योंकि साथ ट्वेलथ फेल का चक्र नहीं है। (श्री विधु विनोद चोपड़ा और श्री योगेश ईंशर का आधार।) सुमेरा का बड़पन देखिए, उन्होंने अपनी पकड़ से मुक्त करने के लिए भाषा के रिश्तेदारों से कभी कोई फ़िरती नहीं माँगी। डिक्शनरी में गिरावट या अत्याचार जैसे शब्द पाए जाते हैं लेकिन वे भाषा के संदर्भ में नहीं होते। वैसे भी शब्दकोश साक्षी मात्र होता है, बिना अपनी राय रखे शब्दों का अर्थ, इतिहास या तकनीकी जानकारी देता है। इसीलिए डिक्शनरी में रूखापन होता है, उसे एक बैकड में पढ़ जानेवाले नहीं मिलते। यह बात अलग है कि शब्दकोश के बिना किसी का काम भी नहीं चलता। मानव मनोविज्ञान की मानद उपाधि वाले उस्ताद द्विअर्थ

दे

श के दो राज्य केरलम्, असम और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में बंपर मतदान ने न केवल राजनीतिक दलों को बल्कि पूर्वानुमान लगाने वाले टीवी चैनलों को भी संशय में डाल दिया है। हालांकि जिस तरह का माहौल है, उससे तय है कि असम में भाजपा को एक बार फिर घुसपैठियों का मुद्दा तारचापर बनने जा रहा है, वहीं केरल में सत्तारूढ़ दल सीपीआई के नेतृत्व वाला एलडीएफ गठबंधन सकते में है। केरलम् में हुई 78.01 प्रतिशत मतदान ने सभी को चौंका दिया है। असम में जहां 85.38 प्रतिशत मतदान हुआ है, वहीं पुडुचेरी में 89.81 मतदान हुआ है। 2021 की तुलना में केरलम् में 4.11, असम में 2.89 और पुडुचेरी में 11.91 प्रतिशत मतदान बढ़ा है। इस कारण केरल में संकेत मिलने लगे है कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के विरुद्ध एंटी इनकंबेंसी उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। विजयन पिछले 10 साल से मुख्यमंत्री हैं। इस संकेत से कांग्रेस नीत यूडीएफ प्रसन्न है। इस बार सीपीआईएम के खिलाफ मुस्लिम मतदाता एकजुट होकर मतदान के लिए बाहर आया है। साफ है, इन राज्य-विधानसभाओं में मतदान के बढ़े प्रतिशत ने सारे मापदण्ड ध्वस्त कर दिए हैं।

इन तीनों राज्यों में कुल 296 विधानसभा सीटों पर मतदान हुआ है। इन राज्यों में 5.31 करोड़ मतदाताओं ने बड़-चढ़कर चुनावी यज्ञ में अपनी आहुती देकर 1849 प्रत्याशियों का भाग्य ईवीएम में बंद कर दिया। असम में 2.50 करोड़ मतदाता और 722 उम्मीदवार



निवासियों के संसाधनों को कब्जा लिया है, बल्कि असम का जनसांख्यिकीय घनत्व बिगड़ा हुआ है। धर्मांतरण के साथ ये घुसपैठिए देश-विरोधी गतिविधियों में भी लिप्त पाए गए हैं। स्थानीय जनजातीय समुदायों से इनका सांप्रदायिक संघर्ष भी निरंतर सामने आता रहा है। अतएव असम में घुसपैठिए बड़ा मुद्दा बनकर भाजपा को लाभ पहुंचाने की स्थिति में है। यदि सरमा फिर से मुख्यमंत्री बनते हैं तो असम में घुसपैठियों की समस्या लगाभ समाप्त हो जाने की उम्मीद बढ़ जाएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह भी घुसपैठ को अपनी सभाओं में बड़ा मुद्दा बनकर पेश करते रहे हैं। कांग्रेस की

मतदाता पहचान-पत्र बनवाने का काम किया हुआ है। असम में एसआईआर के बाद 2 लाख 43 हजार मतदाता कम हुए हैं। जबकि अभी भी ये घुसपैठिए बड़ी संख्या में मतदाता बने हुए हैं। केरल में पिनाराई विजयन को एंटी इनकंबेंसी के साथ क्षेत्रीय नेताओं की कमी का भी सामना करना पड़ा है। दरअसल विजयन ने सेकंड लाइन के नेतृत्व को पनपने ही नहीं दिया है। इस कारण कई प्रभावशाली नेता अपने भविष्य की चिंता करते हुए वैचारिकता की परवाह किए बिना भाजपा और कांग्रेस की शरण में चले गए। ऐसे में इन नेताओं ने पार्टी कैडर की भी चिंता नहीं की। सबरीमाला मंदिर के धार्मिक विवाद ने भी विजयन को नुकसान पहुंचाने का काम किया

खंग

डॉ. मुकेश असीमित

लेखक खंगकार हैं।



स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धिविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबन्धु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जेन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित है।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोक्किल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subhassaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सड़कछाप सड़क का दर्शनशास्त्र

दार्शनिक है। आदमी कब सड़क से संसद पहुँच जाए और कब संसद से सड़क पर लौट आए—कहा नहीं जा सकता। जनता सड़क के रास्ते ही नेताओं को संसद का पता देती है और उसी रास्ते से वापसी का न्योता भी। इसलिए सड़क है तो संभावनाएँ हैं—धरने की, हड़ताल की, रैली की, जाम की, और कभी-कभी नंगे नाच की भी। सड़क लोकतंत्र की खुली प्रयोगशाला है।

सड़क है तो गुड्डे हैं। गुड्डे हैं तो मरम्मत है। मरम्मत है तो बजट है। बजट है तो फाइलें हैं। फाइलें हैं तो अफसर का चूल्हा जलता है। सड़क सरकार का बहुउद्देशीय औजार है—शौचालय, पेशाबघर और कचरा निस्तारण की कई योजनाओं से बचा लेती है। लोग सड़क पर ही अत्यास कर लेते हैं, और सड़क 'राइट एप योर डोरस्टेप' कचरा सेवा दे देती है—बिना टैंडर, बिना उद्घाटन।

कोरोना के दिनों में जब सड़कें सूनी हुईं, तो उन्हें भी बुरा लगा। पर जल्दी ही फेब्रुरी मालिकों ने मजदूरों को निकाला और सड़कें फिर गुलजग हो

गईं। मजदूरों के रेलों ने सड़कों को धन्य कर दिया—माँ की गोद फिर गढ़ा।

सड़कें हैं तो एक्सिडेंट हैं। ट्रैफिक पुलिस का डंडा अभियान निरंतर है। चालान से जेबें भी फूल टॉस फूल रही हैं। सड़कें हैं तो फुटपाथ हैं, और



फुटपाथ हैं तो उन पर सोते लोग। वरना नरो में धुत रईसों को कुचलने के लिए लोग मिलेंगे कहीं? सड़कें ही तो हैं जो रील और सेल्फी प्रेमियों की कर्मभूमि हैं—जहाँ जोखिम जितना बड़ा, वृत्त जितना ज्यादा। सड़कें हैं तो सड़कछाप गुंडे भी हैं।

राजनीति की प्रारंभिक पाठशाला यही है। रेहड़ियों से शुरू हुई हस्तावसूली आगे चलकर बड़े घोटालों का पाठ्यक्रम बनती है। सड़क कैडर तैयार करती है—छूटभेये से गैंगस्टर तक।

आजकल सड़कों पर ध्यान कम है। ध्यान दें भी तो कैसे—सड़कें बड़ी बेवफा हैं। बनाई नहीं कि उखड़ने को तैयार। इतना भी सब्र नहीं कि एक चुनावी कार्यकाल पूरा हो जाए। मरम्मत का बजट पास होते-होते नेता बदल जाता है और क्रेडिट कोई और ले जाता है। समाधान सरल है—हर नेता अपने नाम की सड़क बनवाए। चुनाव हार जाए तो सड़क उठाकर घर ले जाए।

सड़कें माँ जैसी हैं—बिब्लुतुन गाय की तरह। पान की पीक, कचरा, मल-मूत्र—सब समेट लेती हैं। बिना शिकायत। तभी तो आपने देखा होगा—गायों और उनके अधिकृत-अनधिकृत पतियों, यानी सांड-सड़क पर आराम से जुगाली करते हुए। रटाफ का मामला है जी—जैसे रेलवे में टीटी अपने रटाफ को सीट दिला ही देता है।

अब प्रश्न उठता है—माँ तो सड़क है, बाप कौन? हर कोई पूछता है, 'सड़क तेरे बाप की है क्या?' पर बाप का पता आज तक नहीं चला। मिलते ही सुचना दी जाएगी।

कभी-कभी सड़कें उधड़ती हैं ताकि शहर को ग्रामीण जीवन की झुलक मिल सके—कक्रोट, भूल, मिट्टी—जमीन से जुड़े रहने का प्रशिक्षण। चिकनी सड़क पर खेलेंगे तो बच्चों की इम्यूनिटी कहीं बनेगी? सड़कें पतित-पावनी भी हैं—मोक्षदायिनी। प्राचीन योगियों की परंपरा आज सड़कें निभा रही हैं—कहीं दुर्गम, कहीं अदृश्य, कहीं कीचड़, कहीं खाई। हैं भी, नहीं भी—ब्रह्मस्वरूप। फाइलों में हैं, वादों में हैं, पर चलने में अक्सर नहीं। न शुरुआत दिखती है, न अंत। कोई पूछे, 'यह सड़क कहीं जाती है?'—भाग्यशाली है वंजिनकी जाती है। यहाँ तो सालों से देख रहे हैं—नजर ही नहीं आती।

सड़कें वही हैं—जहाँ चाही मोड़ लें, बिना शिकायत। और अगर सरकारी बजट की हों, तो नेता जी उन्हें अपने बंगले तक भी ले जा सकते हैं। सड़कछाप सड़क—बस महसूस करने की चीज है। मानने की, जानने की नहीं।



कानून और न्याय

विचारणीय सवाल

विनय झैलावत

पूर्व असिस्टेंट सॉलिसीटर जनरल एवं बरिष्ठ अधिवक्ता

इन दिनों दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत एक रिक्जुजल आवेदन चर्चा में है। हाल ही में अरविंद केजरीवाल और उनके साथी प्रत्यर्थियों की ओर से एक आवेदन प्रस्तुत कर अपने मुख्यमंत्री काल में शराब के ट्रेके देने में कमीशन वाले मामले में दोषमुक्ति के खिलाफ सीबीआई द्वारा प्रस्तुत अपील में न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा को स्वयं को उनके प्रकरण से अलग करने के लिए आवेदन प्रस्तुत किया गया है। यह एक औपचारिक आवेदन होता है, जो संबंधित न्यायालय में पेश किया जाता है। इसका आधार यह है कि न्यायमूर्ति स्वर्णकांता आरएसएस के द्वारा आयोजित एक सेमिनार में शामिल हुई थीं। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने बुधवार को दिल्ली उच्च न्यायालय में एक हलफनामा दायर कर अरविंद केजरीवाल, मनीष सिंसोदिया और चार अन्य लोगों द्वारा दायर उन याचिकाओं का विरोध किया, जिनमें दिल्ली आबकारी नीति मामले में न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा के खुद को सुनवाई से अलग करने की मांग की गई। अपने हलफनामे में एजेंसी ने इस दावे को खारिज कर दिया कि न्यायमूर्ति शर्मा वैचारिक रूप से अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद से जुड़े हैं, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विधिक शाखा है। एजेंसी ने तर्क दिया कि अधिवक्ता परिषद द्वारा आयोजित सेमिनार में शामिल होना किसी भी वैचारिक पूर्वाग्रह का संकेत नहीं है।

हलफनामे के अनुसार किसी न्यायाधीश पर सिर्फ इसलिए पूर्वाग्रह का आरोप लगाना कि उन्होंने गैर-राजनीतिक कानूनी सेमिनारों में हिस्सा लिया, बेबुनियाद है। यह न्यायालय के अधिकार को कम करने और न्याय प्रशासन में दखल देने की कोशिश के समान है। यह संभावित रूप से न्यायालय की अमनता भी हो सकती है। केंद्रीय एजेंसी ने कहा कि अगर अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के किसी कार्यक्रम में शामिल होना किसी न्यायाधीश के वैचारिक पूर्वाग्रह को दिखाता है, तो बड़ी संख्या में मौजूदा उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को ऐसे किसी भी मामले की सुनवाई से खुद को अलग करना पड़ेगा, जिसमें राजनीतिक रूप से प्रभावशाली व्यक्ति आरोपी हों। सीबीआई ने यह भी बताया कि न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा ने आबकारी नीति मामले में नामजद लोगों के पक्ष में भी आदेश दिए हैं।

सेमिनार में शामिल होना क्या वैचारिक पूर्वाग्रह का संकेत!

यह प्रथा कानून की उचित प्रक्रिया के कार्डिनल सिद्धांत से पैदा हुई है कि कोई भी अपने मामले में न्यायाधीश नहीं हो सकता है। कोई भी हित या हितों का टकराव किसी मामले से हटने का आधार होगा, क्योंकि एक न्यायाधीश का कर्तव्य है कि वह निष्पक्ष रूप से कार्य करें। यह न्याय की निष्पक्षता और पवित्रता को सुनिश्चित करता है।

सीबीआई ने उन आरोपों पर भी आपत्ति जताई कि न्यायमूर्ति शर्मा इस मामले की सुनवाई जल्दबाजी में कर रही हैं। सीबीआई के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया है कि सांसदों और विधायकों के खिलाफ मामलों का निपटारा तेजी से किया जाना चाहिए। शीर्ष न्यायालय के निर्देशों का पालन करने को पूर्वाग्रह नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के तौर पर सीबीआई ने लालू यादव और उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ चल रहे मामले का हवाला भी दिया, जिसकी सुनवाई भी न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा ही कर रही हैं। जांच एजेंसी ने बताया कि इस मामले में, न्यायालय ने तीन महीने से भी कम समय में 27 सुनवाई की हैं। इसके अलावा सीबीआई ने यह भी कहा कि उच्च न्यायालय द्वारा निचली अदालत के फैसलों पर प्रथमदृष्टया टिप्पणी करने और आबकारी नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में निचली अदालत की कार्यवाही पर रोक लगाने में कोई गलती नहीं की है।

यह उल्लेखनीय है कि अरविंद केजरीवाल, मनीष सिंसोदिया, दुर्गेश पाठक, विजय नायर, अरूण पिहड़ई और चन्द्रप्रताप सिंह रायत ने न्यायमूर्ति शर्मा से खुद को सुनवाई से अलग करने की मांग करते हुए अर्जी प्रस्तुत की है। अरविंद केजरीवाल 6 अप्रैल को खुद उच्च न्यायालय में पेश हुए थे और अपनी अर्जी के संबंध में कुछ बातें रखी थीं। उन्होंने कहा कि वह न्यायाधीश को सुनवाई से अलग करने की अर्जी पर खुद ही बहस करेंगे। इस मामले की अगली सुनवाई 13 अप्रैल को होनी है। दिलचस्प सवाल यह है कि आखिर अरविंद केजरीवाल ने ऐसी अर्जी फाइल क्यों की है? यह जानना आवश्यक है कि आखिर क्या होता है न्यायाधीशों को

खुद को सुनवाई से अलग करना?

यह पीठासीन न्यायालय के अधिकारी या प्रशासनिक अधिकारी के बीच मतभेद के कारण आधिकारिक कार्यवाही जैसे कानूनी कार्यवाही में भाग लेने से अलग रहने से संबंधित है। इसमें न्यायाधीश स्वयंसेवक से निर्णय लेते हैं कि उन्हें सुनवाई करनी चाहिए अथवा नहीं। पुनर्मूल्यांकन को नियंत्रित करने वाला कोई औपचारिक नियम नहीं है। इसका आशय मात्र यह है कि

समय पक्षपात किया है। हितों का टकराव भी कई तरह से हो सकता है। जैसे मामले में शामिल किसी पक्ष के साथ पूर्व या व्यक्तिगत संबंध होना। किसी विशिष्ट मामले में न्यायाधीश की भागीदारी कब और कैसे बाहर रखा जाना चाहिए, जहां उसका कोई हित हो, इस प्रथा पर संयुक्त राज्य अमेरिका और युनाइटेड किंगडम की स्थापना के बाद से ही इस पर गरमा गरम बहस होती रही है। साथ ही किसी मामले में शामिल पक्षों में से एक के लिये पेश वकीलों या गैर-वकीलों के साथ एकतरफा संचार भी इसका आधार हो सकता है। उच्च न्यायालय के ऐसे फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की जा सकती है, जिस पर निर्णय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा तब निर्णय लिया गया जब वह उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो। किसी कंपनी के ऐसे मामलों में भी जिसमें उसके शेयर

हो। तब भी जब उसने अपने हित का खुलासा नहीं किया हो और इसमें कोई आपत्ति ना हो। यह प्रथा कानून की उचित प्रक्रिया के कार्डिनल सिद्धांत से पैदा हुई है कि कोई भी अपने मामले में न्यायाधीश नहीं हो सकता है। कोई भी हित या हितों का टकराव किसी मामले से हटने का आधार होगा। क्योंकि, एक न्यायाधीश का कर्तव्य है कि वह निष्पक्ष रूप से कार्य करें। सामान्यतः सुनवाई से अलग होने का फैसला न्यायाधीश खुद करता है। यह हितों के किसी भी संभावित टकराव का खुलासा करने के लिए न्यायाधीश के विवेक पर निर्भर करता है। कई न्यायाधीश मामले में शामिल वकीलों को मौखिक रूप से खुद को अलग करने के कारणों की व्याख्या नहीं करते हैं। कुछ कालानुक्रमिक क्रम में कारण बताते हैं। कुछ परिस्थितियों

में न्याय न केवल होना चाहिए, बल्कि होता हुआ दिखना भी चाहिए। यह एक गंभीर प्रक्रिया है और इसका उपयोग केवल ठोस आधार पर ही किया जाना चाहिए। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के कई निर्णयों में इस मुद्दे पर बात की गई है। रंजीत ठाकुर बनाम भारत संघ (1987) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि यह दूसरे पक्ष के मन में पक्षपात की संभावना की आशंका के प्रति तर्कों को बल प्रदान करना है। न्यायालय को अपने सामने मौजूद पक्ष के तर्कों को देखना चाहिये और तय करना चाहिये कि वह पक्षपाती है या नहीं। खुद को सुनवाई से अलग रखने का कारणों में हितों का टकराव भी होता है। यदि ऐसा लगता है तो एक न्यायाधीश मामले की सुनवाई से पीछे हट सकता है ताकि यह धारणा पैदा न हो कि उसने मामले का निर्णय करते

समय पक्षपात किया है। हितों का टकराव भी कई तरह से हो सकता है। जैसे मामले में शामिल किसी पक्ष के साथ पूर्व या व्यक्तिगत संबंध होना। किसी विशिष्ट मामले में न्यायाधीश की भागीदारी कब और कैसे बाहर रखा जाना चाहिए, जहां उसका कोई हित हो, इस प्रथा पर संयुक्त राज्य अमेरिका और युनाइटेड किंगडम की स्थापना के बाद से ही इस पर गरमा गरम बहस होती रही है। साथ ही किसी मामले में शामिल पक्षों में से एक के लिये पेश वकीलों या गैर-वकीलों के साथ एकतरफा संचार भी इसका आधार हो सकता है। उच्च न्यायालय के ऐसे फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की जा सकती है, जिस पर निर्णय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा तब निर्णय लिया गया जब वह उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो। किसी कंपनी के ऐसे मामलों में भी जिसमें उसके शेयर

हो। तब भी जब उसने अपने हित का खुलासा नहीं किया हो और इसमें कोई आपत्ति ना हो। यह प्रथा कानून की उचित प्रक्रिया के कार्डिनल सिद्धांत से पैदा हुई है कि कोई भी अपने मामले में न्यायाधीश नहीं हो सकता है। कोई भी हित या हितों का टकराव किसी मामले से हटने का आधार होगा। क्योंकि, एक न्यायाधीश का कर्तव्य है कि वह निष्पक्ष रूप से कार्य करें। सामान्यतः सुनवाई से अलग होने का फैसला न्यायाधीश खुद करता है। यह हितों के किसी भी संभावित टकराव का खुलासा करने के लिए न्यायाधीश के विवेक पर निर्भर करता है। कई न्यायाधीश मामले में शामिल वकीलों को मौखिक रूप से खुद को अलग करने के कारणों की व्याख्या नहीं करते हैं। कुछ कालानुक्रमिक क्रम में कारण बताते हैं। कुछ परिस्थितियों

में न्याय न केवल होना चाहिए, बल्कि होता हुआ दिखना भी चाहिए। यह एक गंभीर प्रक्रिया है और इसका उपयोग केवल ठोस आधार पर ही किया जाना चाहिए। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के कई निर्णयों में इस मुद्दे पर बात की गई है। रंजीत ठाकुर बनाम भारत संघ (1987) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि यह दूसरे पक्ष के मन में पक्षपात की संभावना की आशंका के प्रति तर्कों को बल प्रदान करना है। न्यायालय को अपने सामने मौजूद पक्ष के तर्कों को देखना चाहिये और तय करना चाहिये कि वह पक्षपाती है या नहीं। खुद को सुनवाई से अलग रखने का कारणों में हितों का टकराव भी होता है। यदि ऐसा लगता है तो एक न्यायाधीश मामले की सुनवाई से पीछे हट सकता है ताकि यह धारणा पैदा न हो कि उसने मामले का निर्णय करते

समय पक्षपात किया है। हितों का टकराव भी कई तरह से हो सकता है। जैसे मामले में शामिल किसी पक्ष के साथ पूर्व या व्यक्तिगत संबंध होना। किसी विशिष्ट मामले में न्यायाधीश की भागीदारी कब और कैसे बाहर रखा जाना चाहिए, जहां उसका कोई हित हो, इस प्रथा पर संयुक्त राज्य अमेरिका और युनाइटेड किंगडम की स्थापना के बाद से ही इस पर गरमा गरम बहस होती रही है। साथ ही किसी मामले में शामिल पक्षों में से एक के लिये पेश वकीलों या गैर-वकीलों के साथ एकतरफा संचार भी इसका आधार हो सकता है। उच्च न्यायालय के ऐसे फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की जा सकती है, जिस पर निर्णय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा तब निर्णय लिया गया जब वह उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो। किसी कंपनी के ऐसे मामलों में भी जिसमें उसके शेयर

जलियांवाला बाग

दिलीप कुमार पाठक

लेखक पत्रकार हैं।



इतिहास के पन्नों में कुछ तारीखें ऐसी होती हैं जो स्याही से नहीं, बल्कि इंसानी लहू से लिखी जाती हैं। 13 अप्रैल 1919 की वह मनहूस शाम भी एक ऐसी ही तारीख थी, जिसने न केवल पंजाब की मिट्टी को लाल किया, बल्कि सोए हुए समूचे हिंदुस्तान की सोई हुई आत्मा को भी झकझोर कर रख दिया। अमृतसर का वह छोटा सा मैदान, जिसे दुनिया आज 'जलियांवाला बाग' के नाम से जानती है, महज़ ईट-पत्थरों का बना कोई स्मारक नहीं है। वह गवाह है उस अमानवीय बर्बरता का जिसे सुनकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और वह प्रतीक है उस अटूट हौसले का जिसने दुनिया के सबसे बड़े ब्रिटिश साम्राज्य के पतन की नींव रख दी थी। बैसाखी का पावन दिन था। पंजाब के गाँवों और शहरों में उत्सव का माहौल होना चाहिए था। लोग नए कपड़े पहनकर मेलों की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन अमृतसर की हवाओं में एक अजीब सी बेचैनी घुली हुई थी। पूरा देश 'रोलेट एक्ट' जैसे काले कानून के खिलाफ गुस्से में उबल रहा था, जिसने बिना दलील और बिना वकील के किसी को भी जेल भेजने की ताकत अंग्रेजों को दे दी थी। इसी अन्याय के खिलाफ अपनी शांतिपूर्ण आवाज़ दर्ज कराने के लिए शाम के वक्त करीब बीस हजार लोग उस बाग में इकट्ठा हुए थे। उस विशाल भीड़ में मासूम बच्चे थे, अपने परिवारों के साथ आई महिलाएँ थीं और वे बुजुर्ग भी थे जो अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में माथा टेकने के बाद सुस्ताने के लिए वहाँ रुके थे। किसी को भी इस बात का रसी भर भी अंदाजा नहीं था कि अगले कुछ मिनट उनकी जिंदगी के आखिरी पल

पर्व विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।



भा रत की मिट्टी केवल अन्न नहीं उपजाती बल्कि उत्सव, पराक्रम और त्याग की गाथाएँ भी रचती है। भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र में, जहाँ लोक-जीवन ऋतुओं के चक्र के साथ कदमताल करता है, 'बैसाखी' भारतीय आत्मा के पुनर्जागरण का पर्व है। यह पर्व उस समय आता है, जब प्रकृति अपना श्रृंगार पूर्ण कर चुकी होती है और किसान की मेहनत स्वर्ण-कणों (गेहूँ की फसल) के रूप में खेतों में लहलहाने लगती है। लेकिन बैसाखी का फलक केवल कृषि तक सीमित नहीं है; यह कृषि से शुरू होकर 'खालसा' के शौर्य और स्वतंत्रता संग्राम के बलिदान तक विस्तृत है। बैसाखी का पर्व भारतीय जनमानस की आत्मा, विशेषकर किसान के पसीने की खुशबू और सिखों के गौरवशाली इतिहास का एक अनूठा संगम है।

कृषि प्रधान भारत में बैसाखी का सीधा और गहरा संबंध फसलों के पकने और प्रकृति के उल्लास से है। जब चैत्र मास की विदाई होती है और वैशाख का आगमन होता है, तब पंजाब और हरियाणा के खेतों में गेहूँ की सुनहरी बालियाँ हवा के झोंकों के साथ झूमने लगती हैं। यही किसान की साल भर की मेहनत के सफल होने का प्रतीक है। किसान जब अपनी लहलहाती फसल को देखता है तो उसका हृदय कृतज्ञता और उल्लास से भर जाता है। यही वह क्षण होता है, जब डोल-नगाड़ों की थाप पर पंजाब के

आज़ादी की वो कीमत, जिसे हिंदुस्तान कभी नहीं भूलेगा

अमृतसर का वह छोटा सा मैदान, जिसे दुनिया आज 'जलियांवाला बाग' के नाम से जानती है, महज़ ईट-पत्थरों का बना कोई स्मारक नहीं है। वह गवाह है उस अमानवीय बर्बरता का जिसे सुनकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और वह प्रतीक है उस अटूट हौसले का जिसने दुनिया के सबसे बड़े ब्रिटिश साम्राज्य के पतन की नींव रख दी थी। बैसाखी का पावन दिन था। पंजाब के गाँवों और शहरों में उत्सव का माहौल होना चाहिए था। लोग नए कपड़े पहनकर मेलों की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन अमृतसर की हवाओं में एक अजीब सी बेचैनी घुली हुई थी। पूरा देश 'रोलेट एक्ट' जैसे काले कानून के खिलाफ गुस्से में उबल रहा था, जिसने बिना दलील और बिना वकील के किसी को भी जेल भेजने की ताकत अंग्रेजों को दे दी थी। इसी अन्याय के खिलाफ अपनी शांतिपूर्ण आवाज़ दर्ज कराने के लिए शाम के वक्त करीब बीस हजार लोग उस बाग में इकट्ठा हुए थे।

साबित होने वाले हैं। शाम के करीब सवा पांच बज रहे थे, जब अचानक जनरल रेजिनल्ड डायर अपने नब्बे सशस्त्र सैनिकों के साथ उस बेहद संकरे रास्ते से दाखिल हुआ, जो बाग के अंदर आने और बाहर जाने का एकमात्र मार्ग था। उसने न तो भीड़ को तितर-बितर होने की कोई चेतावनी दी और न ही शांति की कोई अपील की। उसने बस पत्थर दिल होकर एक क्रूर आदेश दिया—'फायर!' अगले दस मिनट तक जो मंजर वहाँ दिखा, वह मानवता के इतिहास पर सबसे गहरा और बदनुमा कलंक था। सैनिकों की रायफलें तब तक आग उगलती रहीं जब तक कि उनकी आखिरी गोली खत्म नहीं हो गई। बाग की दीवारों सात-आठ फीट ऊँची थीं और एकमात्र निकास द्वार पर मौत का पहरा था। लोग बढ़हास होकर अपनी जान बचाने के लिए उन दीवारों पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन डायर के सिपाही जानबूझकर उन्हीं को निशाना बना रहे थे। चीख-पुकार, धुँएँ और मलबे के बीच, अपनी जान

बचाने की जद्दोजहद में सैकड़ों लोगों ने उस पुराने कुएं में छलांग लगा दी, जिसे आज हम श्रद्धा से 'शहीदी कुआँ' कहते हैं। देखते ही देखते वह कुआँ लाशों से पट



गया। सरकारी रिकॉर्ड्स भले ही मरने वालों की संख्या 379 बताते हैं, लेकिन हकीकत यह थी कि उस शाम हजारों घरों के चिराग हमेशा के लिए बुझ गए थे।

इस जघन्य हत्याकांड ने पूरी दुनिया की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। यह वह ऐतिहासिक मोड़ था जहाँ से अंग्रेजों की भारत से विदाई की उल्टी गिनती शुरू हुई। इस घटना के विरोध में गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर ने अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी और महात्मा गांधी का वह विश्वास पूरी तरह टूट गया जो वे कभी अंग्रेज़ी न्याय प्रणाली में रखते थे। जलियांवाला बाग के इसी खूनी मंजर ने एक 15 साल के किशोर 'ऊधम सिंह' के भीतर प्रतिशोध का ऐसा लावा भरा कि उन्होंने 21 साल तक इस अपमान की आग को अपने सीने में जलाए रखा। अंततः साल 1940 में लंदन के कैक्सटन हॉल में जाकर उन्होंने जनरल ओ डायर को मौत के घाट उतारा और दुनिया को बताया कि हिंदुस्तान अपने शहीदों का अपमान कभी नहीं भूलता।

यह जलियांवाला बाग ही था जिसने भगत सिंह जैसे अनिगमित क्रांतिकारियों के दिलों में आज़ादी का बीज बोया। कहते हैं कि भगत सिंह इस घटना के बाद कई

मील पैदल चलकर यहाँ आए थे और इस बाग की खूनी मिट्टी को एक बातल में भरकर ले गए थे, ताकि वह उन्हें हर पल गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने की याद दिलाती रहे। आज, जब हम आज़ादी की खुली हवा में गर्व से सांस लेते हैं, तो हमें उन दीवारों की ओर एक बार जरूर देखना चाहिए जो आज भी गोलियों के निशानों को अपनी छाती पर लिए खड़ी हैं। वे निशान आज भी हमसे यह सवाल करते हैं कि जिस अखंड और मजबूत भारत के लिए उन्होंने अपना सीना छलनी करवाया था, क्या हम आज उस विरासत को संभाल पा रहे हैं? 13 अप्रैल का यह दिन केवल इतिहास को दोहराने या शोक मनाने का नहीं है, बल्कि यह खुद के भीतर झँकने और अपनी राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को समझने का दिन है। उन शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम देश की एकता और अखंडता को किसी भी संकष्टों से बचाने में लगे रहें। जलियांवाला बाग की मिट्टी आज भी पवित्र है क्योंकि उसमें हमारे पुरखों का पसीना और लहू एक साथ मिला हुआ है। हमें यह हमेशा याद रखना होगा कि जिस आज़ादी का उत्सव हम मनाते हैं, उसकी जड़ें उसी बाग की नम और खूनी मिट्टी में हैं। हिंदुस्तान उस महान बलिदान को कभी नहीं भूल सकता, और एक सजग नागरिक के तौर पर हमें भी इसे कभी विस्मृत नहीं होने देना चाहिए।

भारतीय आत्मा के पुनर्जागरण का पर्व है बैसाखी

गबरू और मुटियारे भांगड़ा और गिद्ध के रूप में अपनी खुशी का इजहार करते हैं। पारम्परिक घोषाकों की रंगीनी और गुरुद्वारों में जलने वाली दीपमालाएं इस पर्व को एक अलौकिक आभा प्रदान करती हैं।

यद्यपि बैसाखी को विशेष रूप से पंजाब का त्योहार माना जाता है परंतु वास्तव में इसकी जड़ें संपूर्ण भारतवर्ष में फैली हुई हैं। यह पर्व भौगोलिक सीमाओं को लांघकर देश के अलग-अलग हिस्सों में अपनी विशिष्ट पहचान के साथ मनाया जाता है। उत्तर भारत की भांगड़े की गूंज जहाँ इसे ऊर्जा से भर देती है, वहीं पश्चिम बंगाल में इसे 'नवा वर्ष' या 'पोइला बैसाखी' के रूप में नव वर्ष की शुरुआत मानकर मनाया जाता है। दक्षिण भारत के केरल में यही पर्व 'विशू' के नाम से जाना जाता है, जहाँ लोग समृद्धि की कामना के साथ नए साल का स्वागत करते हैं। असम के सुदूर क्षेत्रों में यह 'बिहू' की सुरीली धुनों में समाहित हो जाता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, यह दिन अत्यंत पवित्र है क्योंकि हजारों साल पहले इसी तिथि पर मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। यही कारण है कि इस दिन गंगा के तटों पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ता है और पवित्र नदियों में

स्नान कर दान-पुण्य की परंपरा निर्भाई जाती है। बैसाखी का धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष जितना समृद्ध है, इसका ऐतिहासिक पक्ष उतना ही गौरवशाली और साथ ही मर्मस्पर्शी भी है। सिखों के दसवें गुरु, गुरु



गोविन्द सिंह जी ने सन् 1699 में इसी दिन आनंदपुर साहिब में 'खालसा पंथ' की स्थापना की थी। उन्होंने अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए एक ऐसे समाज की रचना की, जो निर्भय, अनुशासित और

मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित हो। गुरु जी ने 'पंच प्यारों' के माध्यम से मानवता को यह संदेश दिया कि बलिदान ही राष्ट्र और धर्म की रक्षा का सबसे बड़ा मार्ग है। इसीलिए सिख समुदाय के लिए यह दिन केवल फसल का उत्सव नहीं बल्कि उनके आत्म-सम्मान और शौर्य के पुनर्जन्म का दिन है। इतिहास के पन्नों को पलटें तो 13 अप्रैल 1919 का दिन बैसाखी की खुशियों पर एक काले साये की तरह दिखाई देता है। अमृतसर का जलियांवाला बाग आज भी उन अनिगमित शहीदों की चीखों का साक्षी है, जिन्होंने रोलेट एक्ट जैसे काले कानून के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद की थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर हजारों निहत्थे भारतीय वहाँ शांतिपूर्ण सभा के लिए एकत्रित हुए थे लेकिन जनरल डायर की कूरता ने बैसाखी के उत्सव को रक्त रंजित कर दिया। बिना किसी चेतावनी के चलाई गई अंधाधुंध गोलियों ने सैकड़ों भारतीयों के सीने छलनी कर दिए। यह हत्याकांड ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मों की चरम सीमा थी, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक प्रज्वलित

कर दिया। बाद में वीर उधम सिंह ने जनरल डायर को मारकर इस राष्ट्रीय अपमान का प्रतिशोध लिया, जो बैसाखी के प्रति एक क्रांतिकारी श्रद्धांजलि थी। ज्योतिषीय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बैसाखी का विशेष महत्व है। बैसाखी का दिन एक महत्वपूर्ण खगोलीय घटना का सूचक है। इस दिन सूर्य अपनी प्रथम राशि में प्रवेश करता है, जिसे 'मेघ संक्रांति' कहा जाता है। यह वह समय होता है, जब सूर्य अपनी कक्षा के उच्चतम बिंदु पर पहुंच जाता है, जिससे शीत ऋतु का प्रभाव पूर्णतः समाप्त हो जाता है, प्रकृति में नवजीवन का संचार होने लगता है और ग्रीष्म का आगमन होता है। सौर वर्ष के इस आरंभ को समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। यह दिन कालचक्र के नवीन आरंभ का सूचक है। अंततः, बैसाखी केवल एक त्योहार नहीं है बल्कि यह संघर्ष, संस्कृति और समर्पण का अद्भुत समागम है। यह पर्व हमें यही संदेश देता है कि जहाँ परिश्रम का सम्मान है, वहाँ उल्लास का वास होता है; जहाँ अन्याय के विरुद्ध लड़ने का साहस है, वहाँ खालसा का वास होता है और जहाँ राष्ट्र के प्रति प्रेम है, वहाँ बलिदान की अमर गाथाएँ लिखी जाती हैं। यह पर्व हमें गुरु गोविन्द सिंह जी जैसे महापुरुषों के आदर्शों को जीवन में उतारने और राष्ट्र में शांति, सद्भावना तथा भाईचारे के नए युग की शुरुआत करने की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और समाज के कल्याण हेतु सार्थक पहल करने का संदेश देता है। बैसाखी आइए, खुशियों लाई, फसलों की रंगत छाई। नमन उन शहीदों को, जिन्होंने आज़ादी की अलख जगाई।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के मुख्य आतिथ्य में जिला स्तरीय डॉ. अम्बेडकर जयंती समारोह आज

धार। धार जिले में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह गरिमापूर्ण तरीके से मनाया जाएगा। जिला स्तरीय मुख्य कार्यक्रम 13 अप्रैल को जिला मुख्यालय पर आयोजित होगा। यह कार्यक्रम जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के मुख्य आतिथ्य में संपन्न होगा।

सहायक आयुक्त जनजाति कार्य विभाग ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला स्तरीय समारोह का आयोजन पी.जी. कॉलेज धार के ऑडिटोरियम हॉल में रखा गया है। कार्यक्रम प्रातः 11 बजे से प्रारंभ होगा, जिसमें बाबा साहेब के जीवन दर्शन और उनके योगदान पर केंद्रित विभिन्न आयोजन किए जाएंगे।

विकासखण्ड स्तर पर भी होंगे कार्यक्रम— जिला मुख्यालय के साथ-साथ जिले के समस्त विकासखण्ड मुख्यालयों पर भी डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती का उत्साहपूर्वक आयोजन किया जाएगा। स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधियों और प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा

14 अप्रैल को केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर के मुख्य आतिथ्य में निकलेगी भव्य पदयात्रा

धार। धार जिले में 10 अप्रैल से नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा एक उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। यह 25 अप्रैल तक मनाया जाएगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को नारी शक्ति वंदन अधिनियम के प्रावधानों से अवगत कराना और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। जिले में यह पखवाड़ा कलेक्टर के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है।

केंद्रीय मंत्री की उपस्थिति में होगी पदयात्रा

जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग सुभाष जैन ने बताया कि पखवाड़े के अंतर्गत 14 अप्रैल को शाम 4 बजे विशाल नारी शक्ति पदयात्रा (रेली) का आयोजन किया जाएगा। यह यात्रा लालबाग परिसर से प्रारंभ होगी, जिसमें राज्य मंत्री, भारत सरकार, सावित्री ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगी। इस पदयात्रा में समाज की प्रबुद्ध महिलाओं को विशेष रूप से जोड़ा जा रहा है।

विविध रचनात्मक गतिविधियों का होगा आयोजन

अभियान के तहत लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों में पदयात्राओं के साथ-साथ युवा वर्ग द्वारा नारी शक्ति वंदन दीवार तैयार की जाएगी, जिस पर सशक्तिकरण के संदेश अंकित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त त्रि-स्तरीय पंचायतों और नगरीय निकायों में गोष्ठि एवं सेमिनार आयोजित होंगे। धार्मिक, सामाजिक, औद्योगिक और व्यापारिक संघटनों में व्याख्यान कार्यक्रम होंगे। विद्यालयों और महाविद्यालयों में विषय आधारित चर्चाएं आयोजित की जाएंगी।

अम्बेडकर जयंती पर विशेष ग्राम सभा

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर पर विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन किया जाएगा। इन सभाओं में बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ ही उपस्थित जनसमूह को नारी शक्ति वंदन अधिनियम के महत्व के बारे में विस्तार से बताया जाएगा।

जनप्रतिनिधियों की होगी सहभागिता

महिला एवं बाल विकास विभाग को इस संपूर्ण कार्यक्रम का नेटवर्क विभाग बनाया गया है। इन सम्मेलनों में महिला सांसद, विधायक, महापौर, जिला एवं जनपद पंचायत अध्यक्ष, पार्षद, महिला उद्यमी और स्व-सहायता समूहों की सदस्यों सहित लाखों लोगों को आमंत्रित किया गया है ताकि उनके अनुभवों से अन्य महिलाओं को प्रेरणा मिल सके।

सोहागपुर पुलिस थाने में तनाव मुक्ति योग का आयोजन

सोहागपुर। नवीन पुलिस थाना परिसर में मध्यप्रदेश पुलिस एवं हार्टफुलनेस संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में तनावमुक्ति योग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हार्टफुलनेस संस्थान के समन्वयक मोनिका दीक्षित एवं मनीष दीक्षित ने प्रति रविवार की भांति इस रविवार



की प्रातः थाना परिसर में पुलिस विभाग के अधिकारियों एवं पुलिस कर्मियों को रोडमार्श की भांग दौड़ से रहित, चिंता से मुक्ति प्राप्त करने एवं जीवन में संतुलन बनाए रखते हुए तनाव मुक्त मन अव्यवस्थित पुलिसिंग का सशक्त संकल्प एवं पूरे सप्ताह की चुनौती पूर्ण ड्यूटी के लिए 30 मिनट का मानसिक कवच का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर हार्टफुलनेस संस्थान के अतिथियों ने रोजमर्रा के कामकाज पर सारगर्भित उद्बोधन करके आवश्यक जानकारी दी।

विदा ले रहे प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजीव कुमार अग्रवाल, एडीजे पारस जैन ने धार के अधिवक्ताओं की प्रशंसा कर धार जिले में अपने कार्यकाल को यादगार बताया

नवागत प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ममता जैन स्वागत से अभिभूत, धार जिले में इसी प्रकार परस्पर सहयोग की जताई आशा

धार। धार जिला अभिभाषक संघ द्वारा नवागत प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ममता जैन के स्वागत एवं धार से सीहोर स्थानांतरित हुए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजीव कुमार अग्रवाल तथा अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश पारस जैन का विदाई समारोह संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

जिला अभिभाषक संघ धार के अध्यक्ष हितेश ठाकुर एडवोकेट ने स्वागत भाषण में कहा कि धार जिला अभिभाषक संघ का अत्यंत गौरवशाली इतिहास और परंपरा रही है और जिस भावुक हृदय से हम आज स्थानांतरित हुए पी डी जे श्री अग्रवाल साहब को और ए डीजे पारस जैन साहब को विदाई दे रहे हैं नवागत पी डी जे मैडम को इस बात का विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त है कि धार जिले में आगामी समय में भी बार और बेंच के संबंध हमेशा मधुर बने रह कर पक्षकारों को न्याय दिलाने में सफल रहेंगे। समारोह को स्थानांतरित हुए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजीव कुमार अग्रवाल एवं अपर जिला न्यायाधीश पारस जैन ने भी



संबोधित करते हुए अपने धार जिले में पिछले 3 वर्षों के कार्यकाल के अनुभव साझा करते हुए धार जिले के अधिवक्तागण की प्रशंसा की तथा धार जिले में अपने कार्यकाल को यादगार बताया। समारोह को नवागत प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ममता जैन द्वारा संबोधित करते हुए कहा कि जिस गरिमापूर्ण तरीके से आपने मेरा स्वागत किया है मुझे धार जिले में कार्य करने के दौरान आप लोगों से इसी प्रकार परस्पर सहयोग की आशा है। कार्यक्रम को जिले के प्रभारी कलेक्टर अभिषेक चौधरी एवं नगर

पुलिस अधीक्षक आईपीएस सुजावल जग्गा द्वारा भी संबोधित किया गया स्वागत एवं विदाई के इस मिलेजुले कार्यक्रम में कुटुंब न्यायालय की प्रधान न्यायाधीश पावस श्रीवास्तव, विशेष जिला न्यायाधीश मेरी मार्गरेट मैडम सहित समस्त न्यायाधीशगण एवं समस्त अधिवक्तागण उपस्थित थे। समारोह के प्रारंभ में अतिथिगण का स्वागत अभिभाषक संघ के अध्यक्ष हितेश ठाकुर, उपाध्यक्ष राकेश चौधरी, सचिव संतोष जाट, सहसचिव विनय प्रजापति, ग्रंथपाल

विनोद नाभवंशी, वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण देवड़ा, महिला कार्यकारिणी सदस्य सुश्री दुर्गा मेरवाणी, कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य प्रखर सोनी एवं मनोज परमार अधिवक्तागण द्वारा किया गया।

संघ अध्यक्ष हितेश ठाकुर द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए, कार्यक्रम का संचालन अभिभाषक संघ के सचिव संतोष जाट एडवोकेट द्वारा तथा आभार प्रदर्शन कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य प्रखर सोनी द्वारा किया गया।

बैतूल-इटारसी के बीच बचे 21 किमी में नहीं मिल रही सुविधाएं

बैतूल। बैतूल-इटारसी फोरलेन के बरेठा घाट सेक्शन सहित 21 किमी में फोरलेन निर्माण होना शेष है। ऐसे में फोरलेन पर मिलने वाली सुविधाएं भी इस जगह उपलब्ध नहीं हो रही हैं। खासकर वाहनों के पलटने या दुर्घटना के बाद ट्रैफिक व्यवस्था बनाने और दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाने के लिए ईसिडेंट मैनेजमेंट टीम नहीं है। क्रेन, पेट्रोलिंग वाहन जैसी कोई व्यवस्था यहां नहीं मिल रही है। यदि फोरलेन के 21 किमी निर्माण से बचे, इस हिस्से में कोई वाहन पलटता है या दुर्घटनाग्रस्त होता है तो वाहन



यथावत पड़े रहते हैं या संबंधित थाना या विभाग द्वारा वाहनों को हटाया जाता है। कई बार बड़े-बड़े ट्रक पलटने के बाद 12 से 24 घंटे तक सड़क पर ही पड़े रहते हैं। जिससे आने-जाने वाले वाहनों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऊपर से बार-बार जाम की स्थिति निर्मित होती है, यह अलग है। बताया जा रहा है कि इस हिस्से में फोरलेन का काम नहीं होने के कारण यहां पर ईसिडेंट मैनेजमेंट की क्रेन, एंबुलेंस और पेट्रोलिंग वाहन तैनात नहीं रहता है, जबकि इस 21 किमी के रास्ते में हादसे और वाहनों के पलटने जैसी दुर्घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। घायलों को भी इस सुनसान जंगल क्षेत्र में मदद मिलने में परेशानी होती है।

जाम के कारण घोड़ाडोंगरी होते हुए बैतूल पहुंचते हैं वाहन— कई बार सड़क पर वाहनों के पलटने की घटना के बाद लंबा जाम भी लग जाता है। जिसकी वजह से कई बार वाहन चालक बरेठा से घोड़ाडोंगरी

होते हुए बैतूल पहुंचते हैं और यहां से फिर हाड़वे पकड़ते हैं। जिससे उन्हें लंबा फेरा भी लगाना पड़ता है। बताया जा रहा है कि फोरलेन पर इटारसी-बैतूल के बीच जो यह 21 किमी का काम शेष बचा है, इस मार्ग पर ही सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं। जिसके कारण वाहन चालकों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। खासकर वाहन पलटने या दुर्घटनाग्रस्त होने पर तत्काल राहत नहीं मिल पाती है। यदि यह हिस्सा भी फोरलेन में शामिल हो जायेगा तो वाहन चालकों को फोरलेन पर मिलने वाली सभी सुविधाएं प्राप्त होंगी। खासकर वाहन पलटने पर क्रेन या दुर्घटना होने पर तत्काल एंबुलेंस की सुविधा मिलने लगेगी।

बरेठा घाट पर तीन साल में 78 दुर्घटनाएं— बरेठा घाट सेक्शन सड़क सुरक्षा की दृष्टि से भी बेहद संवेदनशील माना जाता है। यहां संकरी और घुमावदार दो-लेन सड़क, ढलान और सीमित दृश्यता के कारण दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है। बताया जा रहा है कि

बरेठा घाट पर 2022 से 2024 के बीच 51 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। वहीं 2025 में भी यहां 27 से अधिक दुर्घटनाएं हुईं। अब तो यहां पर हर दिन 3 से 4 दुर्घटनाएं हो रही हैं। इसी वजह से इस हिस्से का उन्नयन बेहद जरूरी माना जा रहा है। एनएचएआई ने इस सेक्शन के लिए जो नया प्लान तैयार किया है, उसमें घुमावदार रास्तों को सुधारा जाएगा और ब्लैक स्पाट्स का स्थायी समाधान किया जाएगा। सबसे खासबात यह है कि इस पूरे प्रोजेक्ट में वन्यजीव संरक्षण को प्राथमिकता दी गई है। इसके तहत 10 एनिमल अंडरपास और 1 एनिमल ओवरपास बनाए जाएंगे, ताकि टाइगर सहित अन्य वन्यजीवों की आवाजाही प्रभावित न हो। साथ ही क्रैश बैरियर, रंबल स्ट्रिप, साइड बोर्ड, फेंसिंग और अन्य सुरक्षा उपाय भी किए जाएंगे।

नागपुर-भोपाल हाड़वे पर बरेठा 21 किमी बचा शेष— नागपुर-भोपाल जैसी दो बड़े महानगरों को जोड़ने वाले नेशनल हाड़वे पर अब तक अवरोध बैतूल जिले में स्थित बरेठा घाट बचा है। भोपाल और नागपुर के बीच आवागमन को सुगम और तेज करने के लिए वैसे तो कई साल पहले बैतूल से नागपुर और बैतूल से भोपाल के लिए फोरलेन नेशनल हाड़वे को एक साथ मंजूरी मिली थी। इसमें से बैतूल से नागपुर तक 173.3 किलोमीटर लंबे नेशनल हाड़वे (एनएच-47) बहुत पहले बन कर तैयार हो चुका। इसके विपरीत बैतूल से इटारसी के बीच 21 किमी के क्षेत्र में सड़क निर्माण कार्य पर हाईकोर्ट की रोक थी। नागपुर (महाराष्ट्र) के

हाईकोर्ट में दायर पीआईएल के बाद से रुका है काम

इटारसी-बैतूल के माध्यम बरेठा घाट का लगभग 21 किलोमीटर का भाग शेष रह गया था। इसमें केसला रेंज, भीर रेंज तथा बरेठा घाट के तीन खंड (कुल 20.91 किमी) सम्मिलित है। ये सभी खंड वन्यजीव, विशेषकर टाइगर मुवमेंट कॉरिडोर के दृष्टिकोण से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र में आते हैं। इसी के चलते इन खंडों में निर्माण कार्य को 1 अप्रैल 2022 को मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा जारी स्टै आदेश के पश्चात स्थगित कर दिया गया था। इस प्रोजेक्ट के लिए विभिन्न वैधानिक एवं पर्यावरणीय विशेष रूप से वन्यजीव संबंधों मंजूरीयों की आवश्यकता थी। हाईकोर्ट के निर्देशों का पालन करते हुए एनएचएआई ने सभी आवश्यक प्रक्रियाएं निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुरूप पूरी कर ली हैं। प्रोजेक्ट के लिए वाइल्ड लाइफ बोर्ड एवं केन्द्र सरकार से सभी आवश्यक मंजूरीया प्राप्त हो चुकी हैं। अब उच्च न्यायालय द्वारा स्टै के औपचारिक रूप से हटने के संबंध में आदेश की प्रतीक्षा की जा रही है। जैसे ही न्यायालय से इसे संबंध में निर्देश प्राप्त होंगे, एनएचएआई द्वारा शेष बचे सेक्शन में निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाएगा।

इनका कहना है -

बरेठा घाट सेक्शन में ईसिडेंट मैनेजमेंट की टीम नहीं है। इस कारण वाहनों को हटवाने की व्यवस्था फिलहाल यहां पर नहीं है। यहां इस 21 किलोमीटर में काम पूरा होने के बाद यहां टीम नियुक्त की जा सकेगी। वैसे भी बहुत ज्यादा ट्रैफिक जाम होने पर हम व्यवस्था बनाते हैं।

— मनीष मीणा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एनएचएआई

सेवानिवृत्त प्राचार्य महेश पचौरी पंचतत्व में विलीन

बैतूल। सेवानिवृत्त प्राचार्य महेश पचौरी आज रविवार की शाम पंचतत्व में विलीन हो गए। उनका देहावसान सुबह करीब 6 बजे हो गया था। इसके बाद शाम 4.30 बजे उनकी अंतिम यात्रा विकास नगर स्थित निवास से निकली। करीब 5.30 बजे कोठीबाजार मोक्षधाम में उनके अनुज भ्राता वरिष्ठ पत्रकार संजय पचौरी ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस दौरान शहर के सभी समाजसेवी और गणमान्य लोग मौजूद थे। पर्यावरण और गाय के प्रति पचौरी परिवार की प्रतिबद्धता को देखते हुए गौ काष्ठ से उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनकी तेहंवी और श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आगामी 24 अप्रैल को रखा



गया है। 82 वर्षीय महेश पचौरी प्रसिद्ध समाजसेवी और आध्यात्मिक व्यक्तित्व वाली सेवानिवृत्त प्राचार्य श्रीमती शकुंतला पचौरी के पति थे। उनकी चार पुत्रियां कनिका, निमिषा, विपाशा और तुलिका हैं। स्व. महेश पचौरी वरिष्ठ पत्रकार संजय विद्वेदी के ससुर भी थे।

शिक्षक पात्रता परीक्षा टेक की अनिवार्यता समाप्त करने की मांग को लेकर शिक्षकों का प्रभावी प्रदर्शन

सोहागपुर। अध्यापक एवं शिक्षक संयुक्त मोर्चा के तत्वावधान में सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय पर शिक्षकों ने जोरदार प्रदर्शन किया। जिला अध्यापक संघ अध्यक्ष उमेश ठाकुर के नेतृत्व में इस प्रदर्शन में सैकड़ों मातृशक्ति शिक्षिकाओं सहित शिक्षक शामिल हुए। शामिल हुए शिक्षकों ने जबरदस्त नारेबाजी करते हुए अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय पहुंचे। यहां नायब तहसीलदार नीरू जैन को ज्ञापन सौंपा गया। इस संबंध में श्री ठाकुर ने बताया कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेक) की अनिवार्यता समाप्त करने एवं नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना करने के संबंध में ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम सौंपा गया है। जिसमें ज्ञापक, लोक शिक्षण संचालनालय एवं आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग द्वारा प्रदेश के समस्त नॉन-टेक शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेक) उत्तीर्ण करने हेतु निर्देश जारी किए गए हैं। इस संबंध में निवेदन है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) की अधिसूचना दिनांक 10 अगस्त 2010 की कांड़का 4 (क), (ग) एवं कांड़का 5



के अनुसार क्रमशः-

03 सितंबर 2001 के पश्चात नियुक्त शिक्षक (सविदा शाला शिक्षक) 03 सितंबर 2001 के पूर्व नियुक्त शिक्षक (शिक्षकमी व सविदा शाला शिक्षक) तथा वर्ष 2011 से 2014 के मध्य गुरुजी से सविदा शिक्षक के रूप में नियुक्त शिक्षक को टेक से छूट प्रदान की गई है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा परित निर्णय में भी उक्त छूट का उल्लेख किया गया है। इसकेबावजूद विभागीय आयुक्तों द्वारा समस्त सेवारत नॉन-टेक शिक्षकों को टेक उत्तीर्ण करने हेतु बाध्य किया जा रहा है। आपने आरोप लगाया है कि अधिसूचना के प्रावधानों एवं माननीय न्यायालय के निर्णय की भावना के

विपरीत कार्य किया जा है। अतः मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन किया जा रहा है कि आयुक्त लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल द्वारा दिनांक 02 मार्च 2026 तथा आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग, मध्यप्रदेश द्वारा दिनांक 26 मार्च 2026 को जारी आदेशों को तत्काल निरस्त करने की कृपा करें। श्री ठाकुर ने अंत में बताया कि इस आदेश से प्रदेश के लगभग छेड़ लाख शिक्षकों में टेक की

अनिवार्यता के कारण मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि शिक्षकों श अनावश्यक मानसिक तनाव से राहत प्रदान करने की कष्ट करें। मुख्यमंत्री से आग्रह किया गया है कि नवीन शैक्षणिक संवर्ग के शिक्षकों की लंबे समय की को जा रही ज्वलंत मांग को दृष्टिगत रखते हुए उनकी सेवा अवधि की गणना प्रथम नियुक्ति दिनांक से किए जाने हेतु आवश्यक आदेश जारी करें। जिससे पेंशन, ग्रेच्युटी एवं अवकाश नकदीकरण जैसे वैधानिक लाभ पदोन्नति, क्रमोन्नति की भांति सुनिश्चित हो सके। शिक्षक आक्षेप हैं कि इस विषय पर संवेदनशीलता एवं न्यायोचित दृष्टिकोण अपनाते आवश्यक राहत प्रदान करेंगे।

थाना परिसर में मिलेगा शीतल पेयजल, वट वृक्ष के नीचे पक्षियों को दाना-पानी



सोहागपुर। जहां एक ओर आज की चकाचौंध में नागरिक दूसरों के लिए थोड़ा भी समय निकालने में मुश्किल होती है। ऐसे में जब से नवीन पुलिस अधिकारियों एवं पुलिस कर्मियों की नियुक्ति हुई है। ऐसे में नवीन

पुलिस थाना परिसर में आजकल गर्मियों में वट वृक्ष के नीचे पक्षियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था की गई है। वहीं पुलिस थाना परिसर में आने वाले आर्गुतकों के लिए शीतल पेयजल की व्यवस्था की गई है। एएसआई गणेश राय ने

नागरिकों से आग्रह किया है कि इस गर्मी में अपने-अपने घरों अथवा कार्यालयों में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था जरूर करें। पक्षियों के पीने के लिए मिट्टी से बनी चीजों का इस्तेमाल हो। जिससे जल शीतल रहे।

कार्यालय जनपद पंचायत नालख, जिला धार म.प्र.

क्र./1263 /मु.क.वि.यो./ 2026

नालख दिनांक 10/4/2026

विज्ञप्ति

जनपद पंचायत नालख द्वारा दिनांक 20.04.2026 को जनपद पंचायत नालख, तहसील पीथमपुर जिला धार में अनुमानित 200 जोड़े का मुख्यामंत्रि कन्या सामूहिक विवाह का आयोजन किया जाना है। जिसमें निम्नानुसार व्यवस्था किये जाने हेतु निविदाएं आमंत्रित की जा रही है।

- भोजन मीनू - पुड़ी, पापड़ कतरन, तली हुई मिर्च, आलू टमाटर छेले की सब्जी, नुकी, पुलाव अनुमानित संख्या 3000 (तीन हजार व्यक्तियों की)।
- टेन्ट व्यवस्था - 10 सौफे, 100 कुर्सियां कवर के साथ, 300 कुर्सियां सादी, दरी प्रति जोड़े के हिसाब से, 800 गद्दे एवं मंच लकड़ी का।
- माईक व्यवस्था - साउण्ड, माईक एवं लाईट व्यवस्था मंच पुरे परिसर सहित मय जनरेटर व्यवस्था एवं ढेल तासे आदि।
- स्वागत हेतु फुलमाला - संख्या 100, वर्माला 400, गुलदस्ते 10, फूल 20 किलो।
- विवाह कार्यक्रम - वीडियोग्राफी / फोटोग्राफी।
- विवाह कार्यक्रम- फ्लेक्स एवं प्रमाण-पत्र।
- विवाह लान हेतु कुंड निर्माण समाप्त प्रकार की पूजन सामग्री एवं पंडित व्यवस्था।

इच्छुक निविदाकर्ता से सीलबंद लिफाफे में दिनांक 17.04.2026 दोपहर 12:00 बजे तक प्रत्येक बिंदु की पृथक-पृथक दर प्रस्तुत करें। इसी दिनांक को दोपहर 02:00 बजे निविदाये खोली जावेगी। (किसी भी प्रकार के लिये अंतिम निर्णय जनपद पंचायत नालख का सर्वमंय होगा)।

नोट- (सामग्री सम्मिलित होने वाले जोड़ों के हिसाब से घटाई एवं बढ़ाई जा सकती है, कार्यक्रम में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की स्थिति में विज्ञप्ति निरस्त की जा सकेगी व इसकी सूचना 24 घण्टे पूर्व संबंधित को दी जावेगी)।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी
जनपद पंचायत नालख

संक्षिप्त समाचार

संयुक्त संचालक तृप्ति त्रिपाठी ने आंगनवाड़ियों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

बैतूल (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग नर्मदापुरम संभाग की संयुक्त संचालक श्रीमती तृप्ति त्रिपाठी ने गुरुवार को बैतूल जिले के भीमपुर विकासखंड में आंगनवाड़ी केन्द्रों एवं परियोजना कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ग्राम नांदा, पलासपानी, इमलीढाना और ग्वाडीढाना स्थित आंगनवाड़ी केन्द्रों का दौरा कर वहां संचालित गतिविधियों का जायजा लिया। इस दौरान पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों का अवलोकन करते हुए उन्होंने उपस्थित महिलाओं को स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी। संयुक्त संचालक श्रीमती त्रिपाठी ने आंगनवाड़ी केन्द्रों में संचालित ईसीसीई प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा गतिविधियों की भी समीक्षा की और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। इसके पश्चात उन्होंने बाल विकास परियोजना कार्यालय भीमपुर में पर्यवेक्षकों को बैठक लेकर विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में पोषण पखवाड़ा के प्रभावी आयोजन, योजनाओं की लक्ष्य पूर्ति, पोषण ट्रेकर में हितग्राहियों के पंजीयन, आधार एवं आभा आईडी के सत्यापन के निर्देश दिए। उन्होंने कुपोषित बच्चों को एनआरसी भीमपुर में भर्ती कराने तथा सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों को 30 अप्रैल 2026 तक 'सक्षम आंगनवाड़ी' के रूप में विकसित करने के निर्देश भी दिए।

कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने किया जिला कोषालय का औचक निरीक्षण

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने शुक्रवार को कलेक्टर परिसर में स्थित जिला कोषालय के स्ट्रॉंग रूम का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कोषालय के डबल लॉक की व्यवस्थाएं देखीं। निरीक्षण के दौरान जिला कोषालय अधिकारी श्री रूमसिंह डुडवे तथा सहायक कोषालय अधिकारी श्री बृजेश चौर सहित कोषालय के अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने किया जिला कोषालय का औचक निरीक्षण

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने शुक्रवार को कलेक्टर परिसर में स्थित जिला कोषालय के स्ट्रॉंग रूम का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कोषालय के डबल लॉक की व्यवस्थाएं देखीं। निरीक्षण के दौरान जिला कोषालय अधिकारी श्री रूमसिंह डुडवे तथा सहायक कोषालय अधिकारी श्री बृजेश चौर सहित कोषालय के अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए 4314 बालिकाओं का किया टीकाकरण

हरदा (निप्र)। सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए शुक्रवार 10 अप्रैल तक जिले में कुल 4314 बालिकाओं को टीकाकरण किया गया है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच.पी. सिंह ने बताया कि हरदा में 620, टिमरनी में 826, खिरकिया में 841, सिराली में 494, रहटगांव में 525, हंडिया में 1008 बालिकाओं का टीकाकरण किया जा चुका है। इस प्रकार जिले में कुल 6715 के लक्ष्य विरुद्ध 4314 कुल 64.24 प्रतिशत बालिकाओं को एचपीवी टीकाकरण किया गया। डॉ. सिंह ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर ह्यूमन पैपिलोमा वायरस एचपीवी से होता है। एचपीवी टीका एक सुरक्षित और प्रभावी टीका है जो कैंसर से बचाने में मदद करता है। यह टीका जिला चिकित्सालय हरदा तथा टिमरनी, सिराली, खिरकिया व हंडिया के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा रहटगांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में निःशुल्क लगाया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सिंह ने सभी अभिभावकों से अपील की है कि ऐसी बालिकाएँ जिनकी आयु 14 वर्ष तथा 15 वर्ष 3 माह तक की है वे अपनी बालिकाओं को एचपीवी टीकाकरण अवश्य करवाएँ एवं बेटियों का भविष्य सुरक्षित बनाएँ।

जिले के सभी 240 उपार्जन केन्द्रों पर उत्साह के साथ शुरू हुई गेहूँ की खरीदी

535 किसानों से खरीदा गया 2247 मीट्रिक टन गेहूँ **सहीर (निप्र)।** कलेक्टर श्री बालागुरु के. के निर्देशानुसार जिले के सभी 240 उपार्जन केन्द्रों पर समर्थन मूल्य पर गेहूँ खरीदी का कार्य उत्साह और बेहतर व्यवस्थाओं के साथ प्रारंभ हो गया है। इस अवसर पर सभी उपार्जन केन्द्रों पर किसानों का सम्मान किया गया और तौल काटों का पूजन किया गया। जिला उपार्जन प्रभारी श्री आकाश चंदेल ने बताया कि 10 अप्रैल को शाम 05 बजे तक जिले के सभी उपार्जन केन्द्रों पर 535 किसानों से 2247 मीट्रिक टन गेहूँ की खरीदी की गई। इसके साथ ही अभी तक जिले के कुल 19,339 किसानों ने स्टांट बुक किया है। कलेक्टर श्री बालागुरु के. के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा सभी उपार्जन केन्द्रों पर किसानों की सुविधा के लिए छाया, पेयजल, बैठने की व्यवस्था सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की गई हैं, ताकि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। इसके साथ ही संबंधित अधिकारियों द्वारा व्यवस्थाओं का निरीक्षण भी किया जा रहा है।

आयुष विभाग द्वारा शिविर लगाकर मनाया गया विश्व होम्योपैथी दिवस

हरदा (निप्र)। होम्योपैथी के जनक हेनरीमेन के जन्मदिवस के अवसर पर हेनरीमेन जयंती पर प्रतिवर्ष विश्व होम्योपैथिक दिवस मनाया जाता है। जिला आयुष अधिकारी डॉ. अनिल वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर शुक्रवार को आयुष विभाग हरदा अंतर्गत होम्योपैथिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर चारखेड़ा एवं गहलार मध्यप्रदेश शासन के निर्देश अनुसार निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में आसपास के ग्रामों से लगभग 308 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयों का वितरण किया गया। शिविर का शुभारंभ ग्राम सरपंच एवं अन्य अतिथियों की उपस्थिति किया गया।

टीकाकरण ही सर्वाइकल कैंसर से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय: विधायक डॉ पंडाग्रे

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एवं शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सारणी की छात्राओं को लगाई एचपीवी वैक्सीन



बैतूल (निप्र)। बालिकाओं के स्वास्थ्य संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सारणी एवं शासकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय सारणी में शुक्रवार को निःशुल्क एचपीवी टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया गया। इस दौरान छात्राओं को एचपीवी वैक्सीन लगाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने विशेषज्ञ चिकित्सक के रूप में छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के

नेतृत्व में चलाए जा रहे राष्ट्रीय प्रयासों के अंतर्गत संचालित है, जिसका उद्देश्य 14 वर्ष से अधिक आयु की बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से सुरक्षा प्रदान करना है। उन्होंने सर्वाइकल कैंसर के संभावित लक्षण, इसके खतरे एवं एचपीवी टीकाकरण के महत्व के बारे में विस्तृत एवं सरल भाषा में जानकारी दी। उन्होंने बालिकाओं को जागरूक करते हुए कहा कि समय पर टीकाकरण ही इस गंभीर बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है। विधायक डॉ. पंडाग्रे ने कहा कि यह अभियान

महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए एक 'संजीवनी' सिद्ध होगा और भविष्य में सर्वाइकल कैंसर के मामलों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे अपनी 14 वर्ष से अधिक आयु की बालिकाओं को इस निःशुल्क टीकाकरण अभियान का लाभ दिलाकर उन्हें एक सुरक्षित एवं स्वस्थ भविष्य प्रदान करें। कार्यक्रम के दौरान नया अध्यक्ष किशोर बरदे, राजेश आहूजा, गोलू राजपूत, सुभाष चंद्रा सहित जनप्रतिनिधि एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की समीक्षा बैठक सम्पन्न

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता की अध्यक्षता में कलेक्टर के बेतवा सभा कक्ष में जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। कलेक्टर श्री गुप्ता ने जिले में बाल भिक्षावृत्ति रोकने हेतु विशेष कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने विदिशा शहर के हॉटस्पॉट क्षेत्रों का चिह्नंकन कर भिक्षावृत्ति में लिस बच्चों को शिक्षा से जोड़ने तथा जनप्रतिनिधियों के माध्यम से संबंधित परिवारों को आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

जतरपुरा क्षेत्र में अधिक संख्या में ऐसे बच्चे पाए जाने पर उनके स्कूल में प्रवेश सुनिश्चित करने एवं शिक्षा विभाग द्वारा सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए गए। साथ ही उक्त क्षेत्रों में सड़क, बिजली एवं पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए।

कलेक्टर ने निर्देश दिए कि भिक्षावृत्ति करते पाए जाने वाले बच्चों का रेस्क्यू कर उन्हें छात्रावास में रखा जाए तथा उनके पुनर्वास हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। बाल कल्याण समिति में लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने तथा दत्तक ग्रहण (एडॉप्शन) हेतु पात्र बच्चों के संबंध में समयबद्ध कार्यवाही करने के निर्देश भी दिए गए। साथ ही, संप्रेशन गृह से कुछ दिन पूर्व भागी हुई दो बालिकाओं की घटना को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर महोदय ने सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने, नियमित निगरानी बढ़ाने एवं भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने हेतु ठोस कदम उठाने के निर्देश दिए। इस लापरवाही के



लिए ड्यूटी के दौरान उपस्थित हाउस मास्टर, चौकीदार एवं पुलिस आरक्षक की सेवा समाप्त करने के निर्देश भी दिए। बैठक में समिति अंतर्गत संचालित विभिन्न संस्थाओं जैसे किशोर न्याय बोर्ड, बाल कल्याण समिति, शिशु गृह, संप्रेशन गृह, वन स्टॉप सेंटर एवं चाइल्ड लाइन की विस्तृत समीक्षा की गई।

बैठक में जिला कार्यक्रम अधिकारी द्वारा बाल कल्याण समिति, संप्रेशन गृह, शिशु गृह एवं स्पोन्सरशिप योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री रोहित कासवनी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री ओपी स्नोडिया, जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता कांसवा, सहायक संचालक श्री विवेक शर्मा सहित बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री रामबाबू प्रजापति एवं सदस्यगण चंद्रभान सिंह बघेल, श्रीमती सुनीता दांगी, श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, श्री दीवान सिंह मीना

उपस्थित रहे। किशोर न्याय बोर्ड से श्री प्रेम सिंह धाकड़, वन स्टॉप सेंटर प्रभारी श्रीमती कृतिता व्यास एवं संप्रेशन गृह अधीक्षक श्रीमती आकांक्षा मरावी भी बैठक में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, RPF, SJPU सहित अन्य विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

भैरुंदा के शासकीय सदीपनी स्कूल में आधार अपडेशन शिविर आयोजित

सोहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरु के. के निर्देशानुसार शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'विद्यार्थियों के लिए आधार अब विद्यालय के द्वार' अभियान के अंतर्गत भैरुंदा के शासकीय सदीपनी विद्यालय में आधार अपडेशन शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 40 विद्यार्थियों का आधार अपडेट किया गया। कैप प्रभारी श्रीमती राधिका भावरेटा ने बताया कि विद्यालय स्तर पर इस प्रकार के शिविर आयोजित करने से विद्यार्थियों को समय पर आधार अपडेट की सुविधा मिल रही है, जिससे उन्हें विभिन्न शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। विद्यालय प्रशासन ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने बच्चों के आधार को समय-समय पर अपडेट कराते रहें, ताकि भविष्य में किसी प्रकार की असुविधा न हो।

महिला सामुदायिक संगठनों को सहकारिता अधिनियम का प्रशिक्षण

संचालन एवं प्रबंधन पर दिया गया मार्गदर्शन

विदिशा (निप्र)। महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा गठित महिला सामुदायिक संगठनों के लिए सहकारिता अधिनियम अंतर्गत एक दिवसीय समीक्षा सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला पंचायत सभागार, विदिशा में किया गया। कार्यक्रम में मिशन के अंतर्गत गठित महिला सामुदायिक संगठनों को सहकारिता अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार 'प्राथमिक महिला आजीविका बहुप्रयोजन सहकारी संस्था मर्यादित' के रूप में पंजीकरण उपरांत उनके सुचारु संचालन हेतु विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिले के सभी विकासखंडों से लगभग 70 महिला सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को सहकारी संस्थाओं के संचालन से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों जैसे निर्वाचन प्रक्रिया, आंतरिक एवं विभागीय ऑडिट, वार्षिक साधारण सभा का आयोजन, अभिलेख संधारण (बुकस ऑफ रिकॉर्ड) एवं बैंक खातों के संचालन की



विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही संस्थाओं के पारदर्शी एवं प्रभावी संचालन पर विशेष जोर दिया गया। इस अवसर पर आजीविका मिशन के जिला परियोजना प्रबंधक संजय चौरसिया, सहायक प्रबंधक रवि कुमार चौकरे, सहकारिता विभाग के उपायुक्त ध्रुव कुमार झारिया तथा वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक

किशोर अहरवाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने महिलाओं को सहकारी संस्थाओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को सशक्त बनाने, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

एनएचआरसी के स्पेशल मॉनीटर ने सांची में शासकीय अस्पताल का किया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। ह्यूमन राइट कमीशन (एनएचआरसी) के स्पेशल मॉनीटर डॉ प्रदीप कुमार नायक द्वारा आज सांची में शासकीय अस्पताल का निरीक्षण किया गया। उन्होंने लेप्रोसी पेशेंट को दी जा रही दवाइयों तथा नवीन चिन्हांकित लेप्रोसी मरीज और उपचाररत मरीजों को देखा। स्पेशल मॉनीटर डॉ प्रदीप कुमार नायक द्वारा कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा से मरीजों के उपचार के संबंध में चर्चा की गई। साथ ही विभिन्न विभागों द्वारा लेप्रोसी मरीज को दी जाने वाली विभागीय सुविधा के बारे में चर्चा की गई। इस अवसर पर सीएमएचओ डॉ दिनेश खत्री, बीएमओ डॉ रवि कुमार राठौर सहित अन्य डॉक्टर उपस्थित रहे।

जिले में सभी एसडीएम द्वारा उपार्जन केन्द्रों का किया गया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। जिले में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन का कार्य प्रारंभ हो गया है। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा सभी एसडीएम और संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र में उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए हैं। जिनके परिपालन में शुक्रवार को एसडीएम द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। बेगमगंज विकासखण्ड के उपार्जन केन्द्र सीताराम वेयरहाउस तथा दिशांत वेयरहाउस का एसडीएम श्री सीराम मिश्रा द्वारा निरीक्षण किया गया। इस दौरान फसल विक्रय हेतु पहुंचे

किसानों का पुष्पहर पहनकर स्वागत किया गया। इसी प्रकार सिलवानी विकासखण्ड में उपार्जन केन्द्र श्रीजी वेयरहाउस पर जनपद पंचायत अध्यक्ष, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की उपस्थिति में उपार्जन कार्य का शुभारंभ किया गया। औडुल्लागंज विकासखण्ड अंतर्गत उपार्जन केन्द्र मां पार्वती वेयरहाउस ग्राम रोड़चक में जनप्रतिनिधियों और एसडीएम द्वारा तौल काटों का पूजन कर उपार्जन कार्य शुरू कराया गया। गैरतंज विकासखण्ड अंतर्गत एसडीएम श्री अक्षित जैन द्वारा उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. अंबेडकर के जीवन, विचारों और योगदान के बारे में जानकारी दी गई

हरदा (निप्र)। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में 14 अप्रैल तक जिला एवं विकासखंड स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। इन कार्यक्रमों में डॉ. अंबेडकर के जीवन, विचारों, देश एवं लोकतंत्र के लिए उनके योगदान तथा संविधान निर्माण में उनकी महती भूमिका के बारे में बताया जाएगा। इसी क्रम में शुक्रवार को जिला पंचायत के सभाकक्ष में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माध्यापन व दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री गजेन्द्र शाह, विधायक हरदा डॉ. आर.के. दोगने, जिला



पंचायत उपाध्यक्ष श्री दर्शन सिंह गेहलोत, जिला पंचायत सदस्य श्री ललित पटेल व श्री कमलेश सेजकर, जिला पंचायत के अतिरिक्त कार्यक्रम प्रध्यक्ष, आदर्श महाविद्यालय श्री संतोष कुमार राठौर ने प्रवक्ता के रूप में डॉ. अंबेडकर के जीवन, विचारों, देश एवं लोकतंत्र

के लिए उनके योगदान तथा संविधान निर्माण में उनकी महती भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, शिक्षा सेवा प्राधिकरण, पशुपालन विभाग सहित अन्य विभिन्न विभागों द्वारा अपने-अपने विभाग की जनकल्याणकारी एवं हितग्राही मूलक योजनाओं की जानकारी दी गई।

सीएमएचओ डॉ. एच.पी. सिंह ने उपस्थित जनों को सर्वाइकल कैंसर एवं एचपीवी वैक्सीन की जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित लोगों को 14 से 15 वर्ष तक बालिकाओं को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में हरदा विधायक डॉ. दोगने ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती के अवसर पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री गेहलोत, जिला पंचायत सदस्य श्री कमलेश सेजकर व श्री ललित पटेल ने भी सभी को अंबेडकर जी की जयंती की शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री ने राणा सांगा की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत के गौरव, अदम्य साहस और शौर्य के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा संग्राम सिंह 'राणा सांगा' की जयंती पर पुण्य स्मरण कर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राणा सांगा ने अपने अद्वितीय पराक्रम से मातृभूमि की रक्षा की। त्याग व निष्ठा के लिए समर्पित उनका जीवन युवाओं को हर हाल में राष्ट्र सेवा करने का मार्गदर्शन प्रदान करता रहा।

सुरों और संगीत की प्रतिम साधिका र्थी आशा भोसले

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रख्यात गायिका श्रीमती आशा भोसले के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रीमती आशा भोसले को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे सुरों और संगीत की अप्रतिम साधिका थीं। उन्होंने गायन के क्षेत्र में असाधारण प्रतिभा प्रदर्शित की। वे अपनी बड़ी बहन लता मंगेशकर की तरह बहुत योग्य और दक्ष गायिका थीं। शास्त्रीय संगीत और गायन का उन्होंने गहरा अभ्यास किया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आशा भोसले ने अपने गायन करियर में कई दिग्गज कलाकारों के लिए गीत गाए। जिन भी अभिनेत्रियों के लिए उन्होंने गीत गाए उनको अपने अभिनय कैरियर में अपार सफलता मिली। श्रीमती आशा भोसले को पद्म विभूषण और दादासाहेब फाल्के जैसे बड़े अवॉर्ड मिले। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में उन्हें सबसे ज्यादा गीत रिकॉर्ड करने वाली गायिका के रूप में स्थान मिला।

मध्यप्रदेश सरकार ने दिया था राष्ट्रीय सम्मान

आशा भोसले ऐसी गायिका थीं जिन्हें मध्यप्रदेश शासन का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान वर्ष 1989-90 के लिए भी मिल चुका है। वे मध्यप्रदेश से बहुत लगाव रखती थीं। मध्यप्रदेशवासियों से उनका निरंतर संबंध रहा। वे यहां मंचीय प्रस्तुतियां देने के लिए आती रहीं। वर्ष 2011 में मध्य प्रदेश के स्थापना दिवस समारोह में वे राजधानी भोपाल आई थीं। राज्य सरकार ने उन्हें विभिन्न अवसरों पर कार्यक्रमों में आमंत्रित किया।

स्वर कोकिला आशा भोसले ने अनगिनत पीढ़ियों के हृदय में स्थायी स्थान बनाया : शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने संगीत जगत की अनुपम स्वर साधिका श्रीमती आशा भोसले के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह समाचार अत्यंत पीड़ादायक है और भारतीय संगीत जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आशा भोसले की अद्वितीय गायकी, भावपूर्ण स्वर और बहुमुखी प्रतिभा ने भारतीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई। उनकी आवाज ने अनगिनत पीढ़ियों के हृदय में स्थायी स्थान बनाया है और उनके गीत सदैव प्रेरणा देते रहेंगे। उन्होंने कहा कि उनका निधन केवल एक महान कलाकार का नहीं, बल्कि एक युग के अंत के समान है। संगीत जगत में उनकी कमी हमेशा महसूस की जाएगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने और शोक संतप्त परिजन और असंख्य प्रशंसकों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

सीएम ने श्रद्धेय सुंदर सिंह भंडारी की जयंती पर किया पुण्य स्मरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य, श्रद्धेय सुंदर सिंह भंडारी की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. भंडारी का संगठन के प्रति समर्पण, अनुशासन और राष्ट्रसेवा का संकल्प जनसेवा के पथ पर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धेय लालजी टंडन की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यपाल, श्रद्धेय लालजी टंडन 'बाबूजी' की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. टंडन का संगठन और जनसेवा के प्रति उनका समर्पित जीवन, हम सभी के लिए प्रेरणा का प्रकाश स्तंभ है, जो हमें राष्ट्रसेवा के पथ पर निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति देता रहेगा।

मध्य प्रदेश में मधुमक्खियों का तांडव

72 घंटे में 2 की मौत, अब गेहूं काट रहे किसान पर किया जानलेवा हमला

उमरिया (नप्र)। मध्य प्रदेश में इन दिनों मधुमक्खियों के हमले की खौफनाक खबरें आ रही हैं। इन खबरों ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया है। उमरिया जिले में गेहूं की कटाई कर रहे एक वृद्ध किसान को मधुमक्खियों ने घेरकर मार डाला, वहीं 2 दिन पहले आगर मालवा में स्कूल के भीतर परीक्षा दे रहे बच्चों पर मधुमक्खियों के झुंड ने हमला कर दिया, जिसमें एक 9 वर्षीय मासूम की मौत हो गई।

मदद के लिए गृहार लगाता रहा किसान- उमरिया जिले के इंदवार थाना क्षेत्र के ग्राम पनपथा में 65 वर्षीय किसान गोविंद जायसवाल अपने खेत में गेहूं की कटाई कर रहे थे। पास ही एक बरगद के पेड़ पर मधुमक्खियों का बड़ा छत्ता था। बताया जा रहा है कि किसी पक्षी ने छत्ते पर चोंच मार दी, जिससे मधुमक्खियां आक्रामक हो गईं। मधुमक्खियों के झुंड ने गोविंद पर हमला बोल दिया। खेत सुनसान जगह पर होने के कारण उनकी चीख-पुकार किसी ने नहीं सुनी और अत्यधिक डंक लगने से मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

आगर मालवा के स्कूल में अटैक- दूसरी ओर, आगर मालवा के सोयतकला स्थित स्वामी विवेकानंद स्कूल में मातम छ



गया। यहां बच्चे कक्षा में बैठकर परीक्षा दे रहे थे, तभी अचानक मधुमक्खियों के तीन झुंड सक्रिय हो गए। हमले में कक्षा चौथी का छात्र रमन (9 वर्ष) गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे झालावाड़ रेफर किया गया, लेकिन इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। करीब आधा दर्जन अन्य बच्चे भी घायल हैं। विजय सिंह पटले, थाना प्रभारी, इन्दवार (उमरिया) ने कहा उमरिया की घटना की जानकारी मिली है, लेकिन परिजनों ने बिना पुलिस को सूचना दिए अंतिम संस्कार कर दिया। ऐसी घटनाओं में

पुलिस को सूचित करना अनिवार्य है ताकि वैधानिक कार्रवाई की जा सके।

लापरवाही और सुरक्षा पर सवाल- उमरिया की घटना प्राकृतिक और दुर्भाग्यपूर्ण मोड़ थी, लेकिन आगर मालवा का हृदयसा सीधे तौर पर लापरवाही की ओर इशारा करता है। स्कूल प्रबंधन का दावा है कि उन्होंने प्रशासन को छठों के बारे में बताया था, लेकिन सवाल यह है कि बच्चों के बैठने वाली जगह पर खतरा जानते हुए भी परीक्षा क्यों आयोजित की गई?

तेज रफ्तार सीमेंट कैप्सूल वाहन ने 5 को कुचला, मौत

डिंडोरी (नप्र)। डिंडोरी-अमरकंटक मार्ग पर राष्ट्रीय राजमार्ग 45 स्थित किकरा तालाब के पास बीती रात एक दिल दहला देने वाला हादसा हो गया। सड़क किनारे खड़ी अपनी पिकअप का पंचर सुधार रहे आधा दर्जन लोगों को एक बेकाबू सीमेंट कैप्सूल वाहन ने बेरहमी से रौंद दिया। इस भीषण टक्कर में 5 ग्रामीणों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि एक युवक जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहा है।



आधी रात को पसरा मातम

जानकारी के अनुसार, ग्राम परसवाह के रहने वाले ये लोग एक पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होकर घर लौट रहे थे। रात करीब 1 बजे उनकी पिकअप का टायर अचानक पंचर हो गया। गाड़सरई थाना क्षेत्र में किकरा तालाब के पास सभी सड़क किनारे वाहन खड़ा कर पंचर सुधारने में जुटे थे, तभी करजिया से लौट रहे कैप्सूल वाहन के चालक ने लापरवाही से वाहन चलाते हुए उन्हें चपेट में ले लिया।

घटनास्थल पर ही थम गई 5 सांसें

वाहिनी सिंह, पुलिस अधीक्षक, डिंडोरी ने कहा हादसा इतना भीषण था कि वाहन के नीचे आए 5 लोगों को संभलने तक का मौका नहीं मिला। पुलिस अधीक्षक वाहिनी सिंह ने बताया कि मृतकों में 30 से 58 वर्ष की आयु के पुरुष शामिल हैं। घटना की सूचना मिलते ही जिला कलेक्टर अंजू पवन भदौरिया भी मौके पर पहुंचीं और स्थिति का जायजा लिया।

आरोपी चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है और वाहन को जब्त कर लिया गया है। घायलों को बेहतर उपचार और मृतकों के परिजनों को तत्काल सरकारी सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

राज्यसभा की उम्मीदवारी पर पूर्व नेता प्रतिपक्ष डॉ.गोविंद सिंह बोले

हमें कोई नहीं चाहता, मैं दिन में सपने नहीं देखता

भोपाल (नप्र)। एमपी में राज्यसभा की तीन सीटों पर चुनाव होने हैं। इनमें से कांग्रेस के कब्जे वाली सीट पर दिग्विजय सिंह सांसद हैं। उनके तीसरी बार राज्यसभा जाने से इनकार करने के बाद कांग्रेस में केंड्रिटेड को लेकर रेस चल रही है।

इस बीच राज्यसभा सीट पर उम्मीदवारी को लेकर पूर्व नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह ने कहा- सच्चाई ये है कि न तो हमें कोई चाहता है, न कुछ होना है। दिन में सपने गोविंद सिंह नहीं देखा करते।

कांग्रेस में कोई मंथन नहीं चल रहा

डॉ. गोविंद सिंह ने उम्मीदवारों के नामों पर मंथन को लेकर कहा -कांग्रेस अनुशासित पार्टी है, यहां कोई मंथन नहीं चल रहा है। हाईकमान को उम्मीदवार चुनने का अधिकार है। हमारी पार्टी के अध्यक्ष खरोगे जी और राहुल जी जो निर्णय करेंगे, वही सर्वमान्य होगा। बीजेपी वाले तमाम लोग तोड़ने का



प्रयास करेंगे, लेकिन असफल होंगे।

जनाधार वाले नेता को भेजा जाए राज्यसभा

डॉ. गोविंद सिंह ने कहा- जब पूरा निर्णय हमारे हाईकमान पर है, तो राय देना उचित नहीं है। हालांकि, हमारा मानना है कि ऐसे जनाधार

वाले नेता को राज्यसभा में भेजा जाना चाहिए, जो आम जनता और पार्टी के हित में काम करें और लोगों के सुख-दुख में साथ खड़ा रहे।

उन्होंने कहा कि ऐसा प्रतिनिधि प्रदेश में सक्रिय रूप से दौरा करें और भाजपा को आगामी चुनाव में हराने के लिए संघर्ष करें।

कांग्रेस से राज्यसभा के लिए ये नेता दावेदार

पूर्व सीएम कमलनाथ, पूर्व सांसद मीनाक्षी नटयाजन, पूर्व केन्द्रीय मंत्री अरुण यादव, पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल, पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा, एससी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप अहिरवार के अलावा करीब एक दर्जन नेता राज्यसभा जाने के लिए प्रयासरत हैं।

दिग्विजय और जीतू कर चुके हैं इनकार- पूर्व सीएम और मौजूदा राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह और एमपी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी राज्यसभा की रेस से खुद को अलग कर चुके हैं।

प्रदेश में हीटवेव की दस्तक, रतलाम में 40 पार

इंदौर, भोपाल-उज्जैन संभाग में असर ज्यादा, मौसम विभाग की घर में रहने की सलाह

भोपाल (नप्र)। मौसमी उथल-पुथल और चक्रवाती हवाओं का दौर थमते ही गर्मी बढ़ने लगी है। एकदम से तापमान में उछाल आया है। बीते तीन दिन में पारा करीब 5 डिग्री उछलकर 40 डिग्री के पार निकल गया है। रतलाम में 40.6 डिग्री पारा दर्ज किया गया, जो प्रदेश में सबसे ज्यादा है। इसके अलावा नर्मदापुरम, धार, बैरसिया, बड़वानी, विदिशा और खरगोन भी सबसे गर्म शहर बने हैं, जहां 39.0 डिग्री से अधिक तापमान है।

मध्य प्रदेश में अप्रैल के आखिर तक दिन का तापमान 45 डिग्री तक पहुंचने का अलर्ट दिया गया है। मई-जून के जैसी गर्मी एमपी में इसी महीने देखने को मिलेगी। सूरज की सीधी धूप, रेगिस्तानी हवाएं और वायुमंडलीय प्रभाव मिलकर इलाके को



जमकर तपाएंगे। मौसम विज्ञानियों ने चेतावनी भी जारी की है। बता दें कि बीते मार्च के आखिर में ही प्रदेश का पारा 41 डिग्री को छू रहा था। बीच में आंधी-बारिश और ओलावृष्टि से ठंडक बनी थी, लेकिन अब आसमान एकदम साफ होने से गर्मी रौंद रूप दिखाएगी।

पचमढ़ी और कटनी सबसे ठंडे- मौसम विभाग द्वारा जारी बुलेटिन के अनुसार प्रदेश में पचमढ़ी फिलहाल सबसे ठंडा है। यहां न्यूनतम पारा 13.8 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं कटनी में 14.1 डिग्री पारा रहा है। इसके अलावा कल्याणपुर-शहडोल में 15.2 डिग्री, अमरकंटक 15.8 डिग्री और राजगढ़ में 16.5 डिग्री न्यूनतम तापमान रहा। यह प्रदेश के सबसे ठंडे शहर हैं। जबकि रतलाम और नर्मदापुर सबसे गर्म शहर में शामिल हैं।

डॉ. अरुण शर्मा, मौसम वैज्ञानिक, भोपाल ने कहा प्रदेश में अगले पांच दिन मौसम शुष्क रहेगा। पारा बढ़ेगा, लू की आशंका भी बन सकती है। संभव हो तो 12 से 3 बजे तक दोपहर में बाहर निकलने से बचें

कही-सुनी

रवि भोई



(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ के स्थायी डीजीपी का आदेश एक पहेली बन गया है। बताते हैं संघ लोक सेवा आयोग ने राज्य के स्थायी डीजीपी के लिए 1992 बैच के आईपीएस अरुणदेव गौतम और 1994 बैच के आईपीएस हिमांशु गुप्ता का नाम प्रस्तावित किया है। अब छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार को इन दोनों में से एक को चुनना है। यूपीएससी की चिट्ठी के बाद स्थायी डीजीपी की नियुक्ति के लिए हलचल शुरू हुई, पर एक हफ्ते बाद भी शीर्ष स्तर पर मामला ठंडे बस्ते में पड़ा है। कहते हैं स्थायी डीजीपी पर अंतिम फैसला मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को लेना है, इस मामले में गृह मंत्री विजय शर्मा की भी बड़ी भूमिका होगी। खबर है कि अदृश्य शक्ति के दबाव में स्थायी डीजीपी की नियुक्ति का मामला लटक पा रहा है। अरुण देव गौतम को प्रभारी डीजीपी बने एक साल से ज्यादा समय हो गया है। वे जुलाई 2027 में रिटायर हो जाएंगे। जानकारों का कहना है कि अरुणदेव की नियुक्ति में एक पंच फंस रहा है डीजीपी के कार्यकाल को लेकर। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के मुताबिक डीजीपी का कार्यकाल न्यूनतम दो साल होना चाहिए। अब अरुणदेव गौतम को डीजीपी बनाते हैं तो प्रभारी डीजीपी की अवधि को भी कार्यकाल माना जाय या फिर जब से स्थायी डीजीपी बनेंगे तब से दो साल कार्यकाल मिलेगा। स्थायी डीजीपी के मामले में

कब निकलेगा स्थायी डीजीपी का आदेश ?

लेटलतीफी समस्या बन गई है।

भाजपा के दुखी विधायक

कहते हैं अदृश्य और खुलेआम विरोध करने वालों को पार्टी में महत्व और सरकार में पद मिलने से भाजपा के कुछ विधायक इन दिनों बड़े दुखी और अपने को असहाय समझने लगे हैं। चर्चा है कि रायपुर संभाग के एक विधायक का 2023 के चुनाव में विरोध करने वाले दो नेताओं को पार्टी ने सत्ता में भारीदार बना दिया है। इससे विधायक जी बड़े दुखी हैं। विधायक जी भाजपा के जड़ से पैदा होने वाले नेता नहीं हैं। वे हवाई लॉंडा वाले नेता हैं, इस कारण भी उन्हें कड़वा घूंट पीने में थोड़ी तकलीफ हो रही है। बताते हैं सत्ता में भारीदार बने दोनों नेता भी कोई भाजपा के जड़ वाले नहीं हैं, पर विधायक से पहले पार्टी से जुड़े हैं और टिकट के बड़े दावेदार थे। नए-नवेले के उम्मीदवार बनाया जाना दोनों को ही नहीं भाया था। अब दोनों को पद मिलना विधायक जी को नहीं भा रहा है। एक विधायक अपने छत्र विद्रोहियों से इतने दुखी हो गए कि मंच से ही उनके लिए आग उगलने लगे। अब भाजपा के बड़े नेता दुखी विधायकों के आंसू किस तरह पोछते हैं, देखना होगा।

डीजी के तीन पद बनाए जाने की चर्चा

कहते हैं कि छत्तीसगढ़ में पुलिस महानिदेशक के तीन नए पद सृजित किए जाने की जुगत चल रही है। अभी राज्य में डीजी के चार पद हैं। एक्स कैडर तीन पद बन जाएंगे, तो सात डीजी हो जाएंगे। यह अलग बात है कि सरकार पिछले

एक साल से अधिक समय बीत जाने के बाद भी एक डीजी को कोई काम नहीं दे पाई है और बिना काम के ही लाखों रुपए खर्च कर रही है। डीजी के चार पदों में अरुणदेव गौतम, पवनदेव, जीपी सिंह और हिमांशु गुप्ता पदस्थ हैं। इनमें अरुणदेव गौतम प्रभारी डीजीपी हैं। बताते हैं 1994 बैच के एसआरपी कल्लूरी, 1995 बैच के प्रदीप गुप्ता और 1996 बैच के विवेकानंद सिन्हा को डीजी बनाने के लिए पद सृजित करने की बात चल रही है। 1994 बैच के जीपी सिंह और हिमांशु गुप्ता डीजी हैं। एसआरपी कल्लूरी छूटे हैं। भारत सरकार की मंजूरी पर भी मामला निर्भर है। डॉ रमन सिंह के कार्यकाल में भारत सरकार की अनुमति के बिना राज्य सरकार ने मुकेश गुप्ता और आर के विज को स्पेशल डीजी बना दिया गया था। कहा जाता है भारत सरकार की आपत्ति के बाद दोनों को फिर एडीजी बनाना पड़ा था।

मक्सी कुजूर क्यों पिछड़ गए ?

चर्चा का विषय है कि दौड़ में आगे रहने के बाद भी चीफ इंजीनियर मक्सी कुजूर प्रभारी प्रमुख अभियंता क्यों नहीं बन पाए और शंकर ठाकुर की लाटरी लग गई। शंकर ठाकुर 30 जून को रिटायर हो जाएंगे। तीन महीने के लिए प्रभारी इंफ़रनी बने शंकर ठाकुर का नाम वरिष्ठा क्रम में सबसे ऊपर है। इसके बाद मक्सी कुजूर का नाम है। बताते हैं कि प्रभारी इंफ़रनी की दौड़ में चीफ इंजीनियर सतीश कुमार भी शामिल हो गए थे। टीकम को एक भाजपा विधायक का संबंधी बताया जाता है। वरिष्ठा सूची में टीकम का नाम सबसे नीचे है। विवाद

में पड़ने की जगह सबसे वरिष्ठ चीफ इंजीनियर को प्रभारी इंफ़रनी बना दिया गया। मक्सी कुजूर मंत्रालय में जल संसाधन विभाग में ओएसडी थे, उन्हें फिलहाल महानदी परियोजना का चीफ इंजीनियर बना दिया गया है। मक्सी कुजूर के मंत्रालय से बाहर जाने के बाद जल संसाधन विभाग में ओएसडी का पद खाली हो गया है। ओएसडी पद पर कुछ एस ई और ई ई नजरें गड़ाए हुए हैं , अब देखते हैं किसका नंबर लगता है।

डीजीपी के आदेश से चल रहा पुलिस महकमा

रायपुर ग्रामोप,गरियाबंद,कोंडगांव और जांजगीर-चांपा जिलों में कामचलाऊ एसपी की पोस्टिंग प्रभारी डीजीपी के आदेश से ही हो गया। यहां पदस्थ प्रमोटी आईपीएस कार्यमुक्त होकर ट्रेनिंग के लिए हैदराबाद चले गए। बताते हैं कि पुलिस मुख्यालय ने चारों जिलों में तदर्थ एसपी की पोस्टिंग और वहां कार्यरत एसपी को कार्यमुक्त करने का प्रस्ताव शासन को भेजा था, लेकिन शासन की तरफ से अब तक कोई आदेश जारी नहीं हुआ है। पुलिस मुख्यालय का प्रस्ताव गृह सचिव से गृह मंत्री होते हुए मुख्यमंत्री तक जाएगी। सुनते हैं कि फाइलों को ऑनलाइन निपटाने की व्यवस्था के बाद भी निर्णय में विलंब को देखते प्रभारी डीजीपी ने अपने तरफ से आदेश जारी कर खानापूत कर दी। आमतौर पर जिलों में पोस्टिंग मुख्यमंत्री के निर्देश पर होती है। प्रभारी डीजीपी के आदेश पर चार जिलों में एसपी की पोस्टिंग की मंत्रालय और पुलिस महकमें में बड़ी चर्चा है और इसे नई प्रथा का

आगाज बताया जा रहा है।

तीन मंत्री खुफ़िया एजेंसियों की निगाह में

कहते हैं राज्य के तीन मंत्री अलग-अलग कारणों से केंद्रीय खुफ़िया एजेंसियों की निगाह में चढ़ गए हैं। तीनों मंत्रियों की रिपोर्ट भाजपा हाईकमान को भेज दी गई है। कहा जा रहा है कि इन मंत्रियों के विभागों में गड़बड़ी और भ्रष्टाचार की भारी शिकायतें हैं। माना जा रहा है कि पांच राज्यों के चुनाव के बाद मंत्रिमंडल के संभावित फेरबदल में इन तीनों मंत्रियों का विभाग बदल सकता है या फिर उनको झप भी किया जा सकता है। अब देखते क्या होता है, पर एक बात तो साफ़ है कि मंत्रियों के पीछे कई आँख लगी हुई हैं।

हिंमंता मामले में छा का एक कांग्रेस नेता सुर्खियों में

कहते हैं कि अस्म के मुख्यमंत्री हिंमंता बिस्वा सरमा की पत्नी के पासपोर्ट मामले में छत्तीसगढ़ के एक कांग्रेस नेता भी सुर्खियों में हैं। इस मामले में कांग्रेस नेता पवन खेड़ा फिलहाल जलजं हूए हैं। भले ही उन्हें तेलंगाना हाईकोर्ट से कुछ दिनों की राहत मिल गई है। बताते हैं छत्तीसगढ़ के एक कांग्रेस नेता ने पवन खेड़ा के प्रेस कॉन्फ्रेंस लेने से कुछ दिन पहले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में इस मामले में खबर डाला था। अब देखते हैं छत्तीसगढ़ के कांग्रेस नेता पर आंच आती है या फिर पाक साफ़ बच जाते हैं। वैसे छत्तीसगढ़ के ये कांग्रेसी नेता पहले भी सुर्खियों में रहे हैं।